इकाई 3 वंशानुक्रम दृष्टिकोण

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 नातेदारी अध्ययन में वंशानुक्रम

3.2.1. वंश का अर्थ

3.2.2 वंश के प्रकार

3.2.3. अन्य संबंधित शब्दावली– कुल, वंशपरम्परा, गोत्र

3.3 नातेदारी अध्ययन में वंशानुक्रम दृष्टिकोण

3.3.1. वंशानुक्रम दृष्टिकोण का उद्भव

3.3.2. वंशानुक्रम सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएं

3.4 नृविज्ञानियों द्वारा वंशानुक्रम दृष्टिकोण का उपयोग

3.4.1 एल.एच मॉर्गन– वर्णनात्मक और वर्गीकृत शब्दावली

3.4.2 रैडक्लिफ ब्राउन– नातेदारी और विवाह की अफ्रीकी प्रणाली

3.4.3 इवांस प्रिचर्ड–दक्षिण अफ्रीका के नुअर का अध्ययन

3.4.4 मेयर फोर्टेस– टौलेनसी और आशांति की नातेदारी प्रणाली का अध्ययन

3.5 वंशानुक्रम दृष्टिकोण की समालोचना

3.6 सारांश

3.7 संदर्भ

3.8 आपकी प्रगति की जांच के लिए नमूना उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- नातेदारी के अध्ययनों में वंशानुक्रम की अवधारणा का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे
- वंशानुक्रम के ऐतिहासिक विकास का पता लगा सकेंगे
- नातेदारी की प्रणालियों को समझने के लिए वंशानुक्रम दृष्टिकोण का प्रयोग विभिन्न नृविज्ञानियों द्वारा किस प्रकार किया गया यह स्पष्ट कर सकेंगे
- भारत में नातेदारी की प्रणालियों के अनुप्रयोग का अन्वेषण कर सकेंगे
- वंशानुक्रमदृष्टिकोण की समालोचना प्रस्तुत कर सकेंगे।

3.1 परिचय

नातेदारी आमतौर पर विवाह, रक्त और सामाजिक संबंधों द्वारा संबंधों को पहचानने की एक प्रणाली है। संबंध रक्त के आधार पर – जिसे कोन्सन्गुइनेअल के रूप में जाना जाता है या विवाह संबंध के माध्यम से – जिसे एफ़िनल कहा जाता है पर आधारित हो सकते है। यदि एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच के संबंध में वंशानुक्रम शामिल है, तो दोनों कोन्सन्गुइन ("रक्त") संबंधी हैं। उदाहरण के लिए, पिता और पुत्र के बीच संबंध। यदि संबंध विवाह के माध्यम से स्थापित किया गया है, तो यह एफ़िनल (वैवाहिक) है, इसका एक ऐतिहासिक उदाहरण पति–पत्नी का संबंध है।

नातेदारी संबंधों का अध्ययन इस प्रकार तीन दृष्टिकोणों के माध्यम से समझा जा सकता हैः

(i) वंशानुक्रम दृष्टिकोण– रक्त/वंशानुगत संबंधों पर जोर देता है

(ii) गठबंधन दृष्टिकोण– वैवाहिक संबंधों पर जोर देता है

(iii) सांस्कृतिक दृष्टिकोण– नातेदारी को संस्कृति के रूप में केन्द्रित करता है

पहला दृष्टिकोण जिसे वंश के सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है जिसे व्यक्ति (मानव विज्ञान में अहंकार के रूप में संदर्भित) और उसके पूर्वजों, जीवित और मृत के बीच जैविक संबंध की खोज द्वारा नातेदारी प्रणाली के अध्ययन पर केंद्रित है। इस सिद्धांत ने वंशानुक्रम और विवाह प्रक्रिया द्वारा बने संबंधियों के बीच अंतर किया। एफ़िनल (वैवाहिक) संबंधों को रक्त संबंध में प्राथमिक माना जाता था जो कि माध्यमिक था। गठबंधन के दृष्टिकोण में, मुख्य मुद्दा विवाह के परिणामस्वरूप उत्पन्न संबंध से बंधे रक्त संबंधों से परिवर्तित हो गया। इस सिद्धांत का मूल समूहों के गठन के लिए महिलाओं का आदान–प्रदान था। महिलाओं को वस्तु के रूप में प्रदर्शित करने और एफाइन और कंसैंगुइन के बीच के विरोध को सार्वभौमिक मानने के लिए गठबंधन सिद्धांत की आलोचना की गई थी। वंशानुक्रम और गठबंधन दोनों ही सिद्धांतों की सीमितता के कारण नातेदारी का अध्ययन जिस तरीके से होता था उसमें एक आधारभूत परिवर्तन हुआ और 1970 के दशक में नातेदारी का "पूर्ववत" रूप देखा गया। सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने तर्क दिया कि केवल जीव विज्ञान के संदर्भ में नातेदारी को नहीं समझा जा सकता है। जीव विज्ञान के संदर्भ को यूरोपीय संस्कृति से व्युत्पन्न नातेदारी के प्रजातिय–केन्द्रित दृष्टिकोण से अधिक और कुछ नहीं देखा गया। नातेदारी को प्रत्येक समाज की सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में समझा जाता था।

इस इकाई में हम नातेदारी प्रणाली के अध्ययन से वंशानुक्रम दृष्टिकोण के बारे में जानेंगे। इस दृष्टिकोण के अनुसार, समाज में एक व्यक्ति का स्थान काफी हद तक नातेदारी प्रणाली में उसकी स्थिति द्वारा निर्धारित होता था। किसी प्रस्तुत समाज (वंशानुक्रम) द्वारा विशेषाधिकार प्राप्त पुत्रत्व श्रंखला के भीतर एक व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण निर्णायक था। वंशानुक्रम सिद्धांत के प्रस्तावकों ने गैर–पश्चिमी समाजों को उनके नातेदारी संगठन के आधार पर प्रस्तुत किया। गैर–पश्चिमी समाजों को वंशानुक्रम की एक विशेष श्रंखला पर महत्व देते देखा गया था जिसका विश्लेषण उनके सामाजिक कार्यतंत्र को उजागर करना और सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव/पुनरुत्पादन के लिए जिम्मेदार माना जाता था। रक्त संबंधों या वंशानुक्रम के संदर्भ में वंशावली विषयक उत्पत्ति का पता लगाने पर जोर दिया जाता है।

3.2 नातेदारी अध्ययन में वंशानुक्रम

नृविज्ञान में, वंशावली संबंधों और सामाजिक बंधों के संजाल को संदर्भित करने के लिए नातेदारी का उपयोग किया गया है। प्रत्येक समाज ने व्यक्तियों को नातेदार या गैर–नातेदारों के रूप में वर्गीकृत करने के माध्यम विकसित किए हैं। ऐसा करने के तरीकों में से एक है कि व्यक्ति और उसके जीवित और मृत दोनों पूर्वजों के बीच संबंध की श्रंखला को संदर्भित करते हुए पूर्वजों और वंशावली के साथ संबंधों का पता लगाएं। वंशावली समूह में वे व्यक्ति शामिल होते हैं जो किसी विशेष तरीके से पूर्वज के वंशज हों। इस प्रकार दो व्यक्ति जिन्हें परिजन माना जाता है, दो तरीकों में से किसी एक या दूसरे से एक–दूसरे से संबंधित हो सकते हैंः एक जो दूसरे से अवतरित हैं या दोनों समान पूर्वज से अवतरित हैं (ड्यूमॉन्ट 2006)।

3.2.1. वंशानुक्रम की अवधारणा का अर्थ

वंशानुक्रम को अभिभावक–संतान की कड़ियों को सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त अनुक्रम के माध्यम से पूर्वज (या पूर्वजों) से संबंध द्वारा परिभाषित संबंध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। नृविज्ञान में विभिन्न शब्दों 'वंश', 'वंशपरम्परा', 'वंशावली' का प्रयोग 'वंशानुक्रम' शब्द के पर्यायवाची के रूप से किया जाता है। इन शब्दों का प्रयोग नातेदारी अध्ययन में चार प्रकार से किया गया है:

i) निगमित वंशानुक्रम समूहों को निरूपित करने के लिए, अर्थात, आर्थिक और राजनीतिक उद्देश्य के लिए एकजुट हुए समूह

ii) विरासत और उत्तराधिकार के लिए चुने गए वंश को निरूपित करने के लिए

iii) नातेदारी शब्दावली के प्रकार को संदर्भित करने के लिए

vi) उपरोक्त तीन उद्देश्यों के लिए किसके वंश से चुना गया है इसकी परवाह किये बिना (चाहे मातृवंशीय या पितृवंशीय या दोनों के वंश से हों), वंशावली से सम्बंधित रिश्तेदार व्यक्ति के पूर्वज या वंशज को संदर्भित करते हैं। वंशावली से सम्बंधित संबंधी वे होते हैं जो वंशानुक्रम की सीधी श्रृंखला में समान पूर्वजों के समूह से संबंधित होते हैं। वंशावली संबंधी रिश्तेदारों के विपरीत संपार्श्विक संबंधी होते हैं जो समान पूर्वजों के समूह से संबंधित होते हैं लेकिन वंशानुक्रम की सीधी श्रंखला में नहीं होते हैं।

वंशानुक्रम के प्रकार्य

(i)यह वास्तविक, अनुमानित, या कल्पित अभिभावक–संतान की कड़ियों के माध्यम से अंतर–पीढ़ीय संबंधों का पता लगाने में सक्षम बनाता है।

(ii) यह व्यक्ति की संतान या उसके पैत्रिकता को संदर्भित करता है।

(iii) इसका उपयोग किसी के वंश का पता लगाने के लिए किया जाता है।

मॉर्गन ने वंशानुक्रम को एक सांस्कृतिक नियम के रूप में परिभाषित किया है जो एक व्यक्ति को कुछ सामाजिक उद्देश्यों जैसे आपसी सहायता या विवाह के नियमन के लिए रिश्तेदारों के एक विशेष चयनित समूह के साथ संबद्ध करता है (1949:15–16)। संरचनात्मक–कार्यात्मकवादी वंशानुक्रम को एक सामाजिक समूह में या तो पिता या माता के माध्यम से सदस्यों की नियुक्ति को नियंत्रित करने वाली प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं (रिवर 1924)। इस परिभाषा के अनुसार, वंशानुक्रम शब्द जन्म के आधार पर एक सामाजिक समूह में स्वतः नियुक्ति की प्रक्रिया को दर्शाता है लेकिन सदस्यता विहिष्ट होती है और परस्पर व्याप्त नहीं होती है। इस प्रकार लीच (1962) ने वंशानुक्रम को एकल वंशागत समूह में नियुक्ति के सिद्धांत के रूप में परिभाषित किया।

3.2.2 वंशानुक्रम के प्रकार

1. एकरेखीय – यह केवल पूर्वजों की एक श्रृंखला, पुरुष या स्त्री के माध्यम से वंश का पता लगाता है। पुरुष और स्त्री दोनों एक रेखीय परिवार के सदस्य हैं, लेकिन वंश संबंधों को केवल एक लिंग के रिश्तेदारों के माध्यम से ही पहचाना जाता है।

एकरेखीय वंश के दो मूल रूपों को निम्न प्रकार उल्लेखित कहा जाता है:

पुरुष

पि मा

स्त्री

पुरुष और स्त्री

भाइगोबह

पारम्परिकता

पितृवंशीय – पुरुष (पिता) वंशरेखा के माध्यम से वंशानुक्रम का पता लगाना

पि–पिता

मा– माता

भा– भाई

बह– बहन

इगो– वह व्यक्ति जिसकी नातेदारी को संदर्भित किया जा रहा है

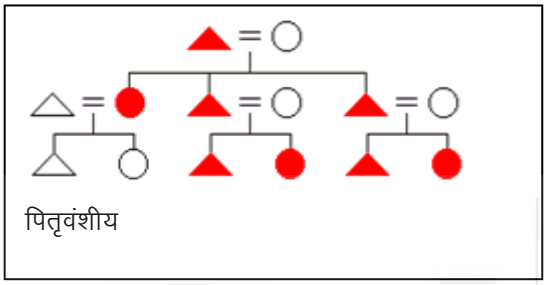

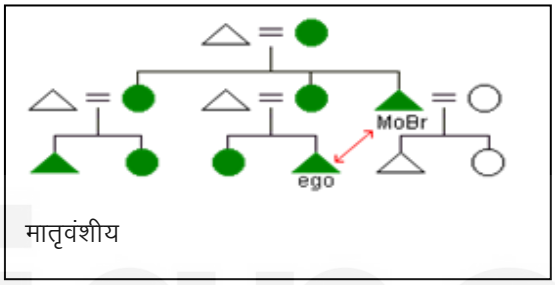

•

पितृवंशीय

मातृवंशीय

मातृवंशीय– महिला (माता) वंशरेखा के माध्यम से

वंशानुक्रम का पता लगाना

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विभिन्न स्तर की स्पष्ट परिबद्ध, स्थिर इकाइयों में एकरेखीय वंशानुक्रम द्वारा सुव्यवस्थित रूप से समाजों का चित्रण रोजमर्रा की राजनीतिक वास्तविकता से काफी दूर था। नातेदारी के व्यक्तिगत अनुभव मानक प्रतिमान से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हो सकते हैं।

2. दोहरा वंशानुक्रम – वंशानुक्रम, पितृवंशीय और मातृवंशीय दोनों समूहों के माध्यम से अनुषंगिक अधिकारों और दायित्वों के साथ पता लगाया जाता है, लेकिन प्रत्येक को अपेक्षाओं का एक भिन्न समुच्चय प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, अचल सामग्री, जैसे भूमि की विरासत पितृवंश का अधिकारक्षेत्र हो सकती है, जबकि मातृवंश चल वस्तुओं जैसे पशुधन की विरासत को नियंत्रित करता है। अफ्रीका के याको में दोहरे वंशानुक्रम की प्रणाली है। याको के बीच, पितृवंशीय वंशजों के पास कृषि भूमि, गृह स्थलों और सहकारी श्रमिकों के आर्थिक अधिकार हैं। इसके अलावा यह सभी सदस्यों के साथ संयुक्त रूप से निवास करता है, अर्थात, एक ही पितृवंशीय कुल के पुरुष एक साथ रहते हैं और खेती की गतिविधियों में सहयोग करते हैं। वे मातृवंशीय वंश को भी मान्यता देते हैं, जो हस्तांतरणीय सम्पत्ती की विरासत को नियंत्रित करता है, जैसे कि पशुधन और मुद्रा।

3. सहमूल – वंशानुक्रम की प्रणाली जिसमें एक बच्चे को पिता और माता दोनों के समान वंशज के रूप में पहचाना जाता है। इसे द्विपक्षीय या द्विरेखीय वंशानुक्रम प्रणाली के रूप में भी जाना जाता है। यहां कोई एकरेखीय समूह नहीं बनाया जा सकता, लेकिन समूह संरचना सहमूल या सह्जतीय (संज्ञानात्मक) हो सकती है अर्थात पिता और माता की ओर से संबंधियों का समूह। इसमें सदस्यता पिता या माता के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

सहमूलवंशानुक्रम

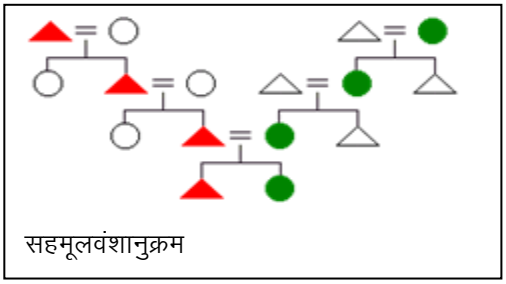

4. उभयलिंगी– पितृवंशीय और मातृवंशीय सिद्धांत दोनों सामाजिक स्तर पर काम करते हैं, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर विभिन्न नियम या विकल्प एक व्यक्ति को माता या पिता के समूह से संबंधित होने के रूप में परिभाषित करते हैं।

वंशानुक्रम समूह के चार प्रकारों में से प्रथम प्रकार पर अधिक बल दिया गया है। नृविज्ञानियों द्वारा एकरेखीय वंशानुक्रम को विजातीय विवाह समूहों के रूप में वर्णित किया गया है। उन्होंने निगमों के रूप में भी काम कियाः उनके सदस्यों ने जमीन साझा की, वास्तविक संपत्ति के संबंध में एक इकाई के रूप में कार्य किया, और कानूनी और राजनीतिक मामलों जैसे युद्ध गतिविधियों, झगड़े, और मुकद्दमों में अन्य समान रूप से गठित समूहों के संबंध में एक "व्यक्ति" के रूप में व्यवहार किया। अर्थात, एक वंश के सदस्य राजनीतिक–न्यायिक क्षेत्र में व्यक्तियों के रूप में कार्य नहीं करते थे, बल्कि खुद को काफी हद तक एक दूसरे के साथ अविभाज्य और अविच्छिन्न मानते थे। यह निगमित्ता एकरेखीय वंश समूहों से बने समाज की स्थिरता और संरचना का आधार था।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. वंशानुक्रम की व्याख्या करें

.....

.....

.....

.....

2. एकरेखीय वंशानुक्रम और दोहरे वंशानुक्रम के बीच क्या भिन्नता है?

.....

.....

.....

3.2.3. अन्य संबंधित शब्दावली

कुलः वंशपरम्परा एक विजातीय विवाह की इकाई है। इसका अर्थ यह है कि एक ही वंशपरम्परा से संबंध रखनेवाले लड़का और लड़की विवाह नहीं कर सकते। एक बड़ी विजातीय विवाह की श्रेणी को कुल कहा जाता है। हिंदुओं में, इस श्रेणी को गोत्र के रूप में जाना जाता है। हिंदुओं में उच्च जाति का प्रत्येक व्यक्ति अपने पिता के कुल से संबंध रखता है और वह कुल या गोत्र में विवाह नहीं कर सकता। आमतौर पर वंश के सदस्यों के समान पूर्वज के बारे में एक वास्तविक व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। लेकिन एक कुल के समान पूर्वज आम तौर पर एक काल्पनिक व्यक्ति होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, अक्सर एक वंश के सदस्य घनिष्ट निकटता में रहते हैं और इसलिए सहयोग या संघर्ष के अधिक अवसर भी होते हैं। सामान्य हित या क्रियाकलाप कुल के सदस्यों के बीच संबंधों को चिन्हित नहीं करते हैं क्योंकि वे आमतौर पर एक बड़े क्षेत्र में बिखरे हुए होते हैं और उनके रिश्ते अक्सर काफी दूरवर्ती होते हैं। आप देखेंगे कि इन संबंधों को केवल विवाह के संदर्भ में ही महत्व देना आम बात है। इसलिए अब हम उत्तर भारत में नातेदारी समूहों की तीसरी विशेष लक्षण के रूप में जाति/उप–जातियों की चर्चा करेंगे। जातियाँ / उपजातियाँ अंतर्विवाही इकाइयाँ हैं जिनके भीतर विवाह होता है।

वंशावली एक वंशानुक्रम समूह है जो माता–पिता में से केवल एक या तो पिता (पितृवंश) या माता (मातृवंश) के माध्यम से पता लगाया जाता है। एक वंशावली के सभी सदस्य एक ही व्यक्ति से अपने समान वंश का पता लगाते हैं। वैचारिक रूप से, वंश अपनी सदस्यता में विशिष्ट होते हैं। हालांकि, व्यवहारिकता में कई संस्कृतियों में ऐसे व्यक्तियों को वंश सदस्यता प्रदान करने की पद्धति हैं जो वंश के जनक से आनुवंशिक रूप से संबंधित नहीं हैं। इनमें से सबसे आम गोद लेने की प्रक्रिया है, हालांकि अवास्तविक रिश्तेदारी के अन्य रूपों का भी उपयोग किया जाता है। वंश आम तौर पर निगमित होते हैं, जिसका अर्थ है कि उनके सदस्य आम तौर पर अधिकारों का प्रयोग करते हैं और सामूहिक रूप से दायित्वों के अधीन होते हैं

फ्रेट्री (बिरादरी) और मोएटी (अर्धांश) नोट्स– जब किसी कारण से कई वंश एक बड़े समूह के रूप में जुड़ जाते हैं तो ऐसे समूह को फ्रैट्री कहा जाता है। एक जनजाति के सभी वंशों को जब दो फ़्रैट्री में विभाजित किया जाता है, तो इस प्रकार

बनने वाली सामाजिक संरचना के रूप को दोहरा संगठन कहा जाता है और इनमें से प्रत्येक फ़्रैटी को मोएटी कहा जाता है। फ्रेट्री विजातीय विवाह भी हो सकता है या नहीं भी हो सकता है। दो टोडा फ्रेट्री यानी ताराथ्रल और तेयेवलियोल सजातीय विवाही हैं, हालांकि ये कई विजातीय विवाही वंशों में विभाजित हैं। ऐसा कहा जाता है कि नागाओं की मोएटी अतीत में सजातीय विवाही थी लेकिन बाद में यह विजातीय विवाही हो गई। बॉन्डो का सामाजिक संगठन दो मोएटियों–ओंटल और किलो में विभाजित है। ये अपने पड़ोसी की संस्कृति के संपर्क में आने से क्षेत्रीय विजातीय विवाही और वंश विजातीय विवाही बन गए। इसी वजह से सगोत्रीय विवाह भी उनके मोएटी में विकसित हुआ। एक फ्रेट्री के कई वंश होते हैं।

गोत्र एक भारतीय जाति के भीतर वंश खंड को संदर्भित करता है जो एक समान पौराणिक पूर्वज से सदस्यों के गुण के आधार पर अंतर्विवाह को प्रतिबंधित करता है, संभावित हिंदू विवाह गठबंधनों को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक है। गोत्र मूल रूप से ब्राह्मणों (पुजारियों) के सात वंश खंडों को संदर्भित करता है, जो सात प्राचीन सिद्ध पुरुषों से अपनी व्युत्पत्ति का पता लगाते हैंः अत्रि, भारद्वाज, भृगु, गौतम, कश्यप, वशिष्ठ और विश्वामित्र। एक आठवां गोत्र अगस्त्य जल्दी जोड़ा गया था, जिसका नाम सिद्ध पुरुषों के नाम पर रखा गया था, जो दक्षिण भारत में वैदिक हिंदू धर्म के प्रसार से जुड़ा हुआ था। बाद के समय में गोत्रों की संख्या में वृद्धि हुई जब किसी की वंशावली को वैदिक द्रष्टा होने का दावा करके ब्राह्मण वंश को सही ठहराने की आवश्यकता महसूस हुई।

नृविज्ञानियों ने उपनिवेशवादी या खोजे गए समाजों को समझने की कोशिश करने के औपनिवेशिक उद्यम के भाग के रूप में सरल समाजों का अध्ययन किया। ये नृविज्ञानी विकासवादी सिद्धांतों द्वारा निर्देशित थे जो इन सरल समाजों में से कुछ को विकास के पहले चरणों के हिस्से के रूप में देखते थे और इसलिए वे अपने संगठन में आदिम थे। मैंने और मॉर्गन द्वारा विकसित सिद्धांतों से प्रभावित जिसमें समाज एक स्तर से संगठन के संकुचित रूपों और निगमों से संपत्ति के स्वामित्व के व्यक्तिगत रूपों में स्थानांतरित हो गए। इन नृविज्ञानियों को परेशान करने वाले कई सवालों में से थे; कुछ राज्यविहीन समाज कैसे संगठित होते हैं? अधिकार, संपत्ति, विरासत आदि को कैसे हस्तांतरित और बनाए रखा जाता है? उन्होंने वंशावली के अध्ययन में इसका उत्तर पाया जहां उन्होंने पाया कि नातेदारी प्रणाली इन तथाकथित "आदिम समाजों" में से कई में महान संगठनात्मक सिद्धांत थे। अपने अगले भाग में हम इनमें से कुछ नृविज्ञानियों को देखेंगे जिन्होंने वंश और उससे बने समूहों को नातेदारी प्रणालियों और बड़े समाजों को समझने के तरीके के रूप में देखा।

3.3 नातेदारी अध्ययन में वंशानुक्रम दृष्टिकोण

एक व्यक्ति और एक समुदाय की भलाई के लिए नातेदारी महत्वपूर्ण है। क्योंकि अलग–अलग समाज नातेदारी को अलग तरह से परिभाषित करते हैं, वे नातेदारी को नियंत्रित करने वाले नियम भी निर्धारित करते हैं, जिन्हें कभी–कभी कानूनी रूप से परिभाषित किया जाता है और कभी–कभी ये निहित होते है। 19वीं शताब्दी में नृविज्ञानियों ने समाज के संविधान को समझने के प्रयास में वंश के सिद्धांत को सामाजिक संरचना के आयोजन के सिद्धांत के रूप में प्रदान किया। इस खंड में, आइए हम वंशानुक्रम दृष्टिकोण के विकास और वंश सिद्धांतकारों द्वारा प्रस्तुत की गई कुछ प्रमुख विशेषताओं की जांच करें।

3.3.1. वंशानुक्रम दृष्टिकोण का उद्भव

नृविज्ञान के अनुशासन के उद्भव के प्रारंभिक चरणों में कार्यात्मक नृविज्ञानी इस प्रश्न के उत्तर की तलाश में थे कि समाज को क्या एकीकृत करता है। जैसा कि नृविज्ञानियों द्वारा अध्ययन किए गए आदिम समाजों को नातेदारी आधारित माना जाता था, सामाजिक संरचना का एकीकरण नातेदारी व्यवस्था में स्थित था। जैसा कि समूहों को समाज के खंडों के रूप में देखा जाता था, वे तभी एकीकृत होंगे जब नातेदारी संगठन के प्रमुख एकरेखीय हों। रैडक्लिफ–ब्राउन के लिए केवल एकरेखीय वंश के आधार पर गठित समूह अतिव्यापन नहीं करता था। इस प्रकार सामाजिक संरचना के निर्माण और निरंतरता के लिए एकरेखी सभ्य समूह की समझ आवश्यक है। इस अवधि के दौरान अधिकांश मानवशास्त्रीय साहित्य उन समाजों से संबंधित थे जिनकी सामाजिक संरचना एकरेखीय वंश पर टिकी हुई थी और इस प्रकार यह धारणा पैदा कर रही थी कि वंश ही संयोजक प्रमुख था।

वंशानुक्रम दृष्टिकोण 19वीं सदी के नृविज्ञानियों, मुख्य रूप से मैंने और मॉर्गन द्वारा उठाई गई सैद्धांतिक समस्याओं का परिवर्तन था। ये प्रारंभिक नृविज्ञानी नातेदारी और अधिकार क्षेत्र के बीच संबंध खोजने में चिंतनशील थे और एक द्विपक्षीय

समूह के रूप में परिवार (माता–पिता दोनों के माध्यम से संबंध का पता लगाना) और एकपक्षीय समूह के रूप में कुल के बीच अंतर भी पाते थे। मुख्य सरोकार आदिम समाज के रचना और उनकी राजनीतिक संस्था की जांच करना था। राजनीतिक संबंधों को विनियमित करने और समूह को स्थिरता प्रदान करने के लिए एकपक्षीय वंश समूह को मानदंड के रूप में लिया गया था। मेन (1861) के अनुसार, आदिम समाज का प्रारंभिक इतिहास बताता है कि राजनीतिक संरचना अधिकार क्षेत्रीय संबंधों के विस्तारित बंधों पर आधारित थी। इसी प्रकार मॉर्गन भी मानते थे कि सरकार के सभी रूपों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है – समाज या 'सोसईटस' (संगठन की इकाई के रूप में कुल) और राज्य (अधिकार क्षेत्र और संपत्ति के आधार पर गठित)।

ब्रिटिश नृविज्ञानी, अपने पूर्ववर्ती के विपरीत, समाज के विकास में रुचि नहीं रखते थे। वे संरचना के गठन और विभिन्न भागों के बीच अंतर्संबंधों से अधिक चिंतित थे। इसलिए विभिन्न भागों के परस्पर अंतर्संबंधों और निर्भरता के परिणामस्वरूप समाज को एक व्यवस्थित व्यवस्था के रूप में देखा जाता था। नृजातिविज्ञान संबंधी अध्ययन के आधार पर ये नृविज्ञानी इस विचार पर पहुंचे कि निवास/अधिकार क्षेत्र और वंशानुक्रम एक ही समाज में सह–अस्तित्व में हैं। इसने वंशानुक्रम सिद्धांत के आधार का गठन किया जो इस विचार का समर्थन करता है कि सभी कुलसंबंधी (वंशानुक्रम की एक ही पंक्ति के पुरुष सदस्य) एक ही निवासस्थान था और इसलिए पितृवंशीय वंशानुक्रम समूह का निर्माण होता है। इसी तरह सभी वैपित्रेयी (वंश की एक ही पंक्ति से महिला सदस्य) ने मातृवंशीय समूह का गठन किया। दोनों ही मामलों में वंशानुक्रम ने समूह एकीकरण का आधार प्रदान किया।

3.3.2. वंशानुक्रम सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएं

वंश सिद्धांत का उपयोग करने वाले मानवविज्ञानी के सिद्धांतों में पाए जाने वाले वंश सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं हैं:

1. वंश सिद्धांतों में विवाह के बाद के निवास के समानांतर नियम हैं:

- पितृस्थानः विवाहित जोड़े और बच्चे पति के समुदाय में रहते हैं। ऐसा आमतौर पर पितृवंशीय वंशानुक्रम के साथ पाया जाता है।
- मातृसत्तात्मकताः विवाहित जोड़े और उनके बच्चे पत्नी के समुदाय में रहते हैं, जो मातृवंशीय वंशानुक्रम से जुड़ा हैं।

2. वंशानुक्रम के नियमों का उपयोग पितृत्व को निर्धारित करने, वंश की पहचान करने और विरासत में मिली स्थिति के आधार पर लोगों को सामाजिक श्रेणियों, समूहों और भूमिकाओं को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है।

वंशानुक्रम दृष्टिकोण सामाजिक समूहों या वंश समूह के गठन पर जोर देता है और इन समूहों को कुछ विशेषताओं को प्रदर्शित करने के रूप में वर्णित किया है:

क) वंश समूह स्थायी सामाजिक इकाइयाँ हैं, जिनके सदस्य समान पूर्वजों से सम्बंधित होने का दावा करते हैं। समूह की सदस्यता जन्म के समय निर्धारित की जाती है और यह आजीवन सदस्यता है। वंश समूह समय के साथ बना रहता है भले ही सदस्यता बदल जाए।

ख) वंश समूह दीर्घकालिक संयुक्त संपत्ति मालिकों और आर्थिक उत्पादन टीमों के रूप में सफलतापूर्वक कार्य करते हैं।

ग) वंश समूह महत्वपूर्ण निगमित कार्य करते हैं जैसे भूमि स्वामित्व, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और पारस्परिक सहायता और समर्थन।

घ) वंश समूह राज्यविहीन समाजों में राजनीतिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए कार्यतंत्र के समान थे। इस सिद्धांत का उपयोग मुखिया के रूप में उत्तराधिकार और उत्तराधिकार की उत्तरगामी श्रंखला का पता लगाने के लिए किया गया था।

3. परिवार और नातेदारी के सिद्धांत के विकास में वंशावली सिद्धांतों ने वंशावली के रेखाचित्र का संदर्भ दिया जिससे परिजनों के बीच संबंधों का पता लगाने में मदद मिली।

4. वंश सिद्धांत ने एक विशेष समूह के सदस्यों के बीच भूमिकाओं और जिम्मेदारी के आवंटन में मदद की, नातेदारी शब्दावली आवंटन को इंगित करने में प्रासंगिक थी।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

1. समाज में स्वभाविक एकीकरण को समझने में ब्रिटिश नृविज्ञानी अपने पूर्ववर्ती से किस प्रकार भिन्न थे?

.....
.....
.....
.....
.....

2. नातेदारी के अध्ययन के लिए वंशानुक्रम दृष्टिकोण की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

3.4 नृविज्ञानियों द्वारा वंशानुक्रम दृष्टिकोण का उपयोग

इस अवधि के प्रमुख ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञानी, जैसे कि मालिनोवस्की, रेडक्लिफ–ब्राउन, इवांस–प्रिचर्ड और मेयर फोर्ट्स ने आमतौर पर इन सवालों के लिए एक कार्यात्मक दृष्टिकोण की वकालत की। कार्यात्मकतावाद का मुख्य क्षेत्र था कि संस्कृति का हर पहलू, चाहे कितना भी अलग क्यों न हो (जैसे, रिश्तेदारी की शर्तें, तकनीक, भोजन, पौराणिक कथाओं, कलात्मक रूपांकनों) का एक मौलिक उद्देश्य था और एक दी गई संस्कृति के भीतर ये विविध संरचनाएं समूह की व्यवहार्यता बनाए रखें के लिए एक साथ काम करती थीं। उदाहरण के लिए, इन विद्वानों ने परिवार को एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था के रूप में देखा जो मुख्य रूप से बच्चों के पालन–पोषण के लिए कार्य करती थी। उनके दृष्टिकोण से यह कार्य काफी हद तक स्व–स्पष्ट और परस्पर–सांस्कृतिक रूप से स्थिर था। नातेदारी के माध्यम से भर्ती किए गए व्यापक समूह, जो राजनीतिक और आर्थिक संगठन का आधार थे, सांस्कृतिक रूप से बहुत अधिक परिवर्तनशील थे और इसलिए अधिक रुचिकर थे।

3.4.1 हेनरी मॉर्गन– वर्णनात्मक और वर्गीकृत शब्दावली

हेनरी लुईस मॉर्गन (1818–1881) जैसा कि हमने पहले भी उल्लेख किया है, सबसे प्रमुख सांस्कृतिक नृविज्ञानी हैं जिनके सिद्धांतों का समाजशास्त्र और नृविज्ञान में पर्याप्त प्रभाव था। मॉर्गन ने मूल अमेरिकी लोगों के बीच फील्डवर्क किया। प्राचीन समाज (1877) में उन्होंने नातेदारी संस्थाओं के विकास को तकनीकी परिवर्तनों और संपत्ति रूपों के विकास से जोड़ने का प्रयास किया। नातेदारी पर उनके अग्रणी कार्य के परिणामस्वरूप एक पुस्तकः सिस्टम्स ऑफ कॉन्सैंग्युनिटी एंड एफिनिटी ऑफ द ह्यूमन फैमिली, 1871 में प्रकाशित हुई। उन्होंने एक विकासवादी सोच प्रदान की जिसके अनुसार नातेदारी को सामाजिक संगठन के पहले चरणों की पहचान करने वाली एक सामाजिक संस्था के रूप में परिभाषित किया गया था। नातेदारी को तथाकथित आदिम समाजों के सामाजिक संगठन के अधिकेंद्र के रूप में प्रस्तुत किया गया। नातेदारी को साधारण समाज को जटिल आधुनिक समाजों से विभेदित करने के सिद्धांत के रूप में देखा गया। नातेदारी ने राज्य–आधारित संगठनों की अनुपस्थिति में सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव की समस्या का स्पष्टीकरण दिया।

मॉर्गन के सूत्रीकरण में रिश्तेदारी के वर्गीकरणीय और वर्णनात्मक प्रणालियों के बीच का अंतर एक महत्वपूर्ण तत्व था। एक वर्गीकरणीय प्रणाली में, जो नातेदार वंशानुक्रम या पूर्वजों के ईगो (महव) की सीधी श्रंखला में नहीं आते – जिन्हें संपार्श्विक

परिजन कहा जाता है, उन्हें उसी शब्दावली समूह में नजदीकी नातेदार के रूप में रखा जाता है जैसे ईगो के वंशानुक्रम की सीधी रेखा में नातेदार। वर्गीकरण प्रणाली, जैसे कि द्रविड़ नातेदारी, उदाहरण के लिए पिता और उसके भाई, और इसके विपरीत माता और उसकी बहन को एक ही शब्द से या समानता के संबंध को इंगित करती है।

एकरेखीय वंशानुक्रम के साथ कई समाजों में – यानी, प्रणाली जो माता–पिता की रेखा में से एक के माध्यम से वंश पर जोर देते हैं, लेकिन दोनों पर एकसाथ नहीं – ईगो भाइयों, बहनों और समानांतर चचेरे भाइयों (जिनके वंशावली बंधों को एक ही लिंग के संबंधित माता–पिता के माध्यम से पता लगाया जाता है, जैसे कि पिता के भाई या मां की बहनें) को संदर्भित करने के लिए शब्दों के एक सेट का उपयोग करता है, जबकि ममेरे भाइयों (क्रॉस–कजिन्स) (पिता की बहन या माता के भाई की संतान) के लिए शब्दों का एक अलग सेट नियोजित किया जाता है। यह व्यवस्था इस तथ्य पर जोर देती है कि क्रॉस–कजिन्स (ममेरे–फुफेरे) भाई–बहन, ईगो (सीधे संबंधी), ईगो के भाई–बहनों और ईगो के समानांतर भाई–बहन के साथ सीधी वंशावली से संबंधित नहीं हैं, इस प्रकार क्रॉस–कजिन्स (ममेरे–फुफेरे) भाई–बहन के बीच विवाह को विजातीय समूह के रूप में नामित करते हैं।

वर्णनात्मक शब्दावली, वर्गीकरण शब्दावली के विपरीत, वंशानुगत और संपार्श्विक परिजन के बीच एक अलगाव बनाए रखती है; उदाहरण के लिए, मां और मां की बहन, हालांकि एक ही पीढ़ी और लिंग के हैं, परन्तु अंतर किया जाता हैं।

3.4.2 रैडक्लिफ ब्राउन– नातेदारी और विवाह की अफ्रीकी प्रणाली

उन्होंने अधिकारों और दायित्वों के क्षेत्र के रूप में नातेदारी प्रणाली के अध्ययन पर जोर दिया और इसे सामाजिक संरचना के हिस्से के रूप में देखा। नातेदारी प्रणाली को एक विशेष सामाजिक संबंध के रूप में माना जाना चाहिए जो सामाजिक संबंधों के व्यापक सामान्य संजाल का हिस्सा बनता है जिसे सामाजिक संरचना कहा जाता है। रैडक्लिफ–ब्राउन के लिए वंश सामाजिक और जैविक दोनों है और इसलिए पितृ (सामाजिक) और जनक (जैविक) पिता के बीच अंतर है। उन्होंने दो प्रकार के अधिकारों के बीच अंतर किया; 'विशिष्ट यक्ति के प्रति अधिकार' कुछ ऐसे निश्चित अधिकारों को संदर्भित करता है जो एक पति के पास अपनी पत्नी के लिए होते हैं। इन अधिकारों के आधार पर, पुरुष को स्त्री के संबंधित कर्तव्यों के निष्पादन की आवश्यकता हो सकती है। यदि उसकी पत्नी के संबंध में, कोई हिंसक कार्रवाई करता है, तो कार्यतंत्र उचित तरीके से रेम (rem, संपत्ति की ओर निर्देशित मुकदमे या अन्य कानूनी कार्रवाई का निर्देशित करना) प्रभावी होगा, और दुर्व्यवहार को उसके पति के खिलाफ अपराध के रूप में माना जाएगा।

नातेदारी प्रणाली के अध्ययन में, रैडक्लिफ ब्राउन नातेदारी और नातेदारी शब्दावली पर भी ध्यान केंद्रित करते है। उनके अनुसार नातेदारी शब्दावली सामाजिक संरचना को समझने में सक्षम बनाती है। साधारण समाजों में नातेदारी सामाजिक संगठन का आधार होती है, और एक विशेष नातेदारी के शब्द से जुड़ी होती है। इस प्रकार किसी समाज की नातेदारी व्यवस्था और शब्दावली के अध्ययन से उसकी सामाजिक संरचना को समझा जा सकता है। उन्होंने रिश्तेदारी की कार्यात्मकता के अध्ययन पर भी जोर दिया।

3.4.3 इवांस प्रिचर्ड–दक्षिण अफ्रीका के नुअर का अध्ययन

इवांस–प्रिचर्ड के दक्षिणी सूडान (1951) के नुएर के अध्ययन ने नातेदारी समूहों पर ध्यान केंद्रित किया, विशेषतः ज्ञात पूर्वज से पुरुष श्रंखला में वंश पर आधारित समूह। उन्होंने दिखाया कि कैसे नुएर समाज में कुलों ने राजनीतिक समूहों के रूप में कार्य किया। उन्होंने अफ्रीका में ऐसे समूहों की गठन, स्थायीकरण और कार्य पद्धति पर जोर दिया। इवांस–प्रिचर्ड ने जोर देकर कहा कि उनका सामाजिक मुहावरा एक गोजातीय मुहावरा है और गाय और नुएर के बीच के संबंध को "सहजीवी" कहा, क्योंकि "मवेशी और मनुष्य एक दूसरे के प्रति अपनी पारस्परिक सेवाओं द्वारा जीवन बनाए रखते हैं"। नुएर का जीवन एक आवश्यक प्रवासी और ऋतु–प्रवासी मनुष्य का है, और किसी विकसित शासी संस्था द्वारा शासित नहीं है। इवांस–प्रिचर्ड

ने नुएर सामाजिक व्यवस्था को 'क्रमागत अराजकता' के रूप में वर्णित किया क्योंकि उन्हें सामाजिक जीवन में वास्तव में नातेदारी के आधार पर दृढ़ता से विनियमित किया गया था।

इवांस–प्रिचर्ड ने नुएर के अपने अध्ययन में 'खंडीय वंशानुक्रम' की अवधारणा विकसित की। नुएर, एक पितृवंशीय समाज में, वंश एक नातेदारी समूह है जो पुरुष श्रंखला में वंशानुक्रम का पता लगाता है। इवांस–प्रिचर्ड ने नुएर कुल/कबीले को अत्यधिक खंडित बताया है। खंड वंशावली विषयक संरचनाएं हैं, और इसलिए हम उन्हें वंशपरंपरा के रूप में संदर्भित करते हैं। यद्यपि कुलों/कबीलों को खंडों में विभाजित किया गया है, लेकिन इसके वंश एक दूसरे के संबंध में अलग–अलग समूह हैं। इस प्रकार, नीचे दिए गए आरेख में, ए एक कबीला है जिसे अधिकतम वंश बी और सी में विभाजित किया गया है और ये फिर से बड़े वंश डी, ई, एफ, और जी में अलग–अलग विभाजित हैं। उसी तरह, छोटी वंशावली एच, आई, जे, और के बड़ी वंशावली ई और जी के खंड हैं; और एल, एम, एन, और ओ न्यूनतम वंश हैं जो छोटी वंशावली एच और जे के खंड हैं। पूरा कबीला एक वंशावली संरचना है, यानी अक्षर उन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनसे कुल/कबीले और उसके खंड अपने वंश का पता लगाते हैं, और जिनसे वे अक्सर अपना नाम लेते हैं।

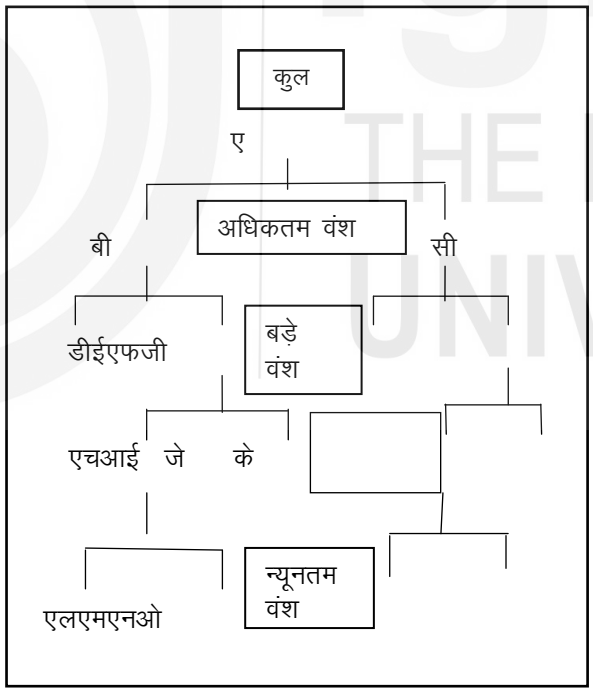

आदिवासी समाज में, खंडीय वंश व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्थान है, खासकर उन जनजातीय समाजों में जहां वंश समूह पुरुष श्रंखला के माध्यम से वंशपरम्परा पर आधारित होते हैं। ये अज्ञेय समूह समाज के आर्थिक और राजनीतिक कामकाज के लिए जिम्मेदार होते हैं। भूमि और जल स्रोतों जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों पर पितृवंश का सामूहिक स्वामित्व या विशेष दावा होता है। खंडीय वंशपरम्परा समाज में पाई जाती है जहाँ व्यवस्थित राजनीतिक संस्था का अभाव होता है। और यहाँ तक कि एक स्थिर सरकार के बिना भी, वंश विभाजन कबीले के सदस्यों के बीच दुर्जेय संबंध बनाए रखने में मदद करता है।

3.4.4 मेयर फोर्टेस– तलेंसी और आशांति की नातेदारी प्रणाली का अध्ययन

फोट्र्स "द स्ट्रक्चर ऑफ यूनीलिनियल डिसेंट ग्रुप्स" (अमेरिकी मानवविज्ञानी, 1953) में उन्होंने खंडीय वंशपरम्परा का सिद्धांत दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि एकरेखीय वंशपरम्परा समूह की संरचना को सामान्यीकृत किया जा सकता है और संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था में इसकी स्थिति को देखा जा सकता है।

सामाजिक संरचना ने प्रदर्शित किया कि कैसे अधिकारक्षेत्र और वंशपरम्परा एक दूसरे से जुड़ेंगें। फोट्र्स ने उत्तरी घाना में तलेंसी समाज को पूरी तरह से "वंश व्यवस्था" के आसपास निर्मित समाज के रूप में चित्रित किया।

चाहे वह पूर्वजों की पूजा कर रहा हो, विवाह की व्यवस्था कर रहा हो, कार्य आवंटित कर रहा हो, या न्यायिक प्राधिकार का प्रयोग कर रहा हो, एक तलेंसी व्यक्ति के अधिकार और जिम्मेदारियां उसके पितृवंश में उसकी स्थिति से निर्धारित होती हैं। यद्यपि वंश की सदस्यता रिश्तेदारी के मानदंडों द्वारा निर्धारित की जाती है, इसके कार्य आर्थिक और राजनीतिक होते हैं।

वंश और पुत्रत्व– पुत्रत्व(दत्तकग्रहण) किसी के माता–पिता की वैध संतान होने से उपजा है और आम तौर पर "द्विपक्षीय, यानी बच्चों को माता–पिता दोनों का पुत्रत्व प्राप्त होता था। न्यायिक स्थिति के रूप में वंश नस्ल द्वारा निर्धारित किया गया था – एक विशेष पूर्वज के वंशज। पितृवंशीय मामलों में, एक व्यक्ति के अपने पिता की ओर से वंश और पुत्रत्व संबंध थे, लेकिन केवल अपनी माता की ओर से पुत्रत्व अधिकार था। पुत्रत्व केवल घरेलू संदर्भों में प्रासंगिक था और वंश एक राजनीतिक–न्यायिक मामला था। वंश एकरेखीय होता है जबकि पुत्रत्व हमेशा द्विपक्षीय होता है।

पूरक पुत्रत्व(दत्तकग्रहण)

मातृपुत्रत्व – पितृवंशीय समाज में माता के पक्ष से पुत्रत्व।

पितृपुत्रत्व – मातृवंशीय समाज में पिता के पक्ष से पुत्रत्व ।

काजीपुत्रत्व – मातृवंशीय समाज में पिता द्वारा पुत्रत्व की खरीद

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

1. नुएर समाज के अध्ययन में इवांस–प्रिचर्ड द्वारा प्रयुक्त खंडीय वंश का वर्णन कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

2. वंश और पुत्रत्व में अंतर की चर्चा कीजिए।

.....
.....
.....

.....

.....

.....

.....

3.5 वंशानुक्रम दृष्टिकोण की समालोचना

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में वंशानुक्रम दृष्टिकोण परिवार, विवाह और नातेदारी के अध्ययन का प्रभावी तरीका था। सिद्धांत ने समाज की सामाजिक संरचना को एकतरफा वंश के सिद्धांत द्वारा व्यवस्थित रूप से समझने में मदद की (पुरुष या महिला दोनों में से किसी एक की एक रेखीय श्रंखला में वंश का पता लगाना)। वंश राजनीतिक संरचना का आधार था और इन समाजों को समझने की कुंजी थी। वंश सिद्धांत की अधिकांश विशेषताएं अफ्रीका में ब्रिटिश नृविज्ञानी द्वारा किए गए अध्ययन से प्राप्त हुई थीं। हालाँकि, जब संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के अन्य हिस्सों के नृविज्ञानी ने अफ्रीका के बाहर शोध करना प्रारंभ किया, तो उन्होंने महसूस किया कि समूह निर्माण का एकमात्र तरीका एकरेखीय वंश नहीं था। अलग–अलग पैमाने की स्पष्ट रूप से परिबद्ध, स्थिर इकाइयों में एकरेखीय वंशानुक्रम द्वारा व्यवस्थित रूप से समाजों का चित्रण रोजमर्रा की राजनीतिक वास्तविकता से काफी दूर था। इसके अलावा इन नृविज्ञानियों ने यह भी बताया कि वंश सिद्धांत केवल रक्त के बंटवारे को मान्यता देता है जबकि समूहों के गठन में विवाह के महत्व को नकार दिया गया था। इसलिए वंश सिद्धांत ने अज्ञेय और आत्मीय परिजनों के बीच भेदभाव को जन्म दिया। वंश सिद्धांतकार द्वारा दिया गया मॉडल कमोबेश प्रामाणिक था और रिश्तेदारी के व्यक्तिगत अनुभव मानक मॉडल से काफी भिन्न हो सकते हैं।

नातेदारी के अध्ययन के वंशानुक्रम दृष्टिकोण में निहित अंतर्विरोधों और सीमाओं ने लेवी–स्ट्रॉस जैसे विचारक को महिलाओं के आदान–प्रदान या गठबंधन पर आधारित एक नए सिद्धांत का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया। समकालीनों की तरह, लेवी–स्ट्रॉस ने एकरेखीय वंश समूह को नातेदारी की मूल संरचना के रूप में माना, हालांकि उन्होंने महिलाओं के आदान–प्रदान के कारण गठबंधन के गठन की वकालत की। उनके सिद्धांत को गठबंधन सिद्धांत कहा जाता था और इसे वंश सिद्धांत के लिए एक उन्नत माना जाता था। गठबंधन सिद्धांत ने परिवार और कुल/कबीले के बीच संबंधों की रैडक्लिफ–ब्राउन की समझ की भी आलोचना की। रैडक्लिफ–ब्राउन ने प्राथमिक परिवार को सार्वभौमिक माना क्योंकि इसने ऐसी भावनाएँ पैदा कीं जो भाई–बहनों के बीच एक बड़े समूह में एकजुटता लाई। इसके विपरीत लेवी–स्ट्रॉस ने तर्क दिया कि विवाह में बहनों के आदान–प्रदान के माध्यम से भाई–बहनों को जोड़ा जा सकता है। एडमंच लीच द्वारा एक और उन्नत तर्क दिया गया था, जिन्होंने मेयर फोट्र्स द्वारा दिए गए संपूरक पुत्रत्व(दत्तकग्रहण)संबंध की अवधारणा की आलोचना की थी। पुत्रत्व(दत्तकग्रहण) संबंध, फोट्र्स के अनुसार, वैवाहिक और रक्त संबंधों के बीच संबंधों के विरोध का परिणाम था। लीच के लिए, यह स्थानीय समूह से जुडी एक प्रणाली थी जो एकरेखीय विवाह गठबंधन को महत्त्व देती थी जिसने खंडीय वंश प्रणालियों की गणना करने में मदद की। आलोचकों द्वारा नातेदारी प्रणाली के अध्ययन के विकल्प प्रस्तुत करने के बावजूद, वंशावली दृष्टिकोण के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। यह सिद्धांत समाज की विकासवादी समझ की स्थापना में योगदान देता है। यह स्वयं को समाज के अन्य व्यापक आदर्शों में ढलने में भी मदद करता है।

3.6 सारांश

इस इकाई में हमने नातेदारी के अध्ययन में वंशानुक्रम दृष्टिकोण के विषय में सीखा। वंशानुक्रम दृष्टिकोण के अनुसार समाज में एक व्यक्ति का स्थान काफी हद तक नातेदारी व्यवस्था के भीतर उसकी स्थिति के आधार पर निर्धारित होता था। वंश सिद्धांतकारों ने रक्त संबंधों या वंश के संदर्भ में वंशावली की उत्पत्ति का पता लगाने पर जोर दिया। हेनरी मेन, रैडक्लिफ–ब्राउन, इवांस–प्रिचर्ड और मेयर फोट्र्स ने वंश दृष्टिकोण का उपयोग करने वाले कुछ प्रमुख नृविज्ञानी थे। वंश सिद्धांत की उत्तर और दक्षिण भारत में अलग–अलग प्रथा है। वंश दृष्टिकोण की आलोचना की गई है और रिश्तेदारी के अध्ययन के लिए गठबंधन दृष्टिकोण के विकास के लिए प्रेरित किया गया है।

3.7 संदर्भ

1. ड्यूमॉन्ट लुइस (2006). दा इंट्रोडक्शन टु टू थियोरीज़ ऑफ़ सोशल एंथ्रोपोलोजी बर्गम पुस्तकें:

2. इवांस–प्रिचर्ड, ई.ई. 1940. द नुअरः ए डिस्क्रिप्शन ऑफ द मोड्स ऑफ लाइवलीहुड एंड पॉलिटिकल इंस्टीट्यूशंस ऑफ ए नीलोटिक पीपल। ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस।

3. फोट्र्स, मेयर एंड ई.ई. इवांस–प्रिचर्ड (एडिशन). 1940. अफ्रीकन पोलिटिकल सिस्टमस. लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

4. फोट्र्स, मेयर. 1953. 'दा स्ट्रकचर ऑफ़ यूनिलीनियल डिसेंट ग्रुप्स की संरचना'. इन डी. ए. बेरेरीअर्स, ए. स्पोहर एंड एस. एल. वाशबर्न (एडिशन), अमेरिकन एंथ्रोपोलोजिस्ट, वॉल्यूम। 55, नंबर 1 (पीपी। 17–41)। शिकागोः द अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन।

5. गफ, ई.के. (1959). दा नायार्स एंड दा डेफ़िनिशन ऑफ़ मैरिज. द जर्नल ऑफ़ द रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड, 89(1), 23–34.

6. कर्वे,आई. 1994. "दा किन्शिप मैप ऑफ़ इंडिया". इन पेट्रीसिया उबेरॉय (एडिशन) फैमिली,किन्शिप एंड मैरिज इन इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेसः न्यू दिल्ली.

7. पार्किन, रॉबर्ट। 1997. किन्शिपः एन इंट्रोडक्शन टू बेसिक कॉन्सेप्ट. ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल पब्लिशर्स लिमिटेड

8. पार्किन, रॉबर्ट एंड लिंडा स्टोन (एडिशन) 2004. किन्शिप एंड फैमिलीः एन अन्थ्रोपोलोगिकल रीडर. ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड

9. मैंने, हेनरी. (1861). 2006. एनशियेंट लॉ. लंदनः बुक जंगल।

10. रैडक्लिफ–ब्राउन, ए.आर. 1931. दा सोशल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ़ ऑस्ट्रेलियन ट्राइब्स. मेलबर्नः मैकमिलन एंड कंपनी, लिमिटेड.

11. यूनिट 2–डिसेंट और एलायंस थ्योरी – ई–ज्ञानकोश, http://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/41275/1/Unit-2.pdfपर ऑनलाइन उपलब्ध है।

12. ऑनलाइन व्याख्यान, वीडियो यहां उपलब्ध हैः https://www.youtube.com/watch?v=mPMz847Cy94

3.8 आपकी प्रगति की जांच के लिए नमूना उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1. वंशानुक्रम को अभिभावक–संतान की कड़ियों को सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त अनुक्रम के माध्यम से पूर्वज (या पूर्वजों) से संबंध द्वारा परिभाषित संबंध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

2. एक रेखीय वंश में वंशावली सम्बन्धों का पता लगाने के लिए एकल श्रंखला का उपयोग किया जाता है, यह या तो पुरुष या स्त्री श्रंखला के माध्यम से होती है। जब पुरुष श्रंखला का उपयोग किया जाता है तो इसे पितृवंशीय वंशानुक्रम के रूप में जाना जाता है और जब स्त्री श्रंखला का उपयोग किया जाता है तो इसे मातृवंशीय वंशानुक्रम कहा जाता है। दोहरे वंशानुक्रम में वंश का पता लगाने के लिए पुरुष और स्त्री दोनों श्रंखलाओं का उपयोग किया जाता है। ऐसे समाज में पितृवंश और मातृवंश दोनों का निर्माण होता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

1. ब्रिटिश नृविज्ञानी, अपने पूर्ववर्ती के विपरीत, समाज के विकास में रुचि नहीं रखते थे। वे संरचना के गठन और विभिन्न भागों के बीच अंतर्संबंधों से अधिक चिंतित थे। इसलिए विभिन्न भागों के परस्पर अंतर्संबंधों और निर्भरता के परिणामस्वरूप समाज को एक व्यवस्थित व्यवस्था के रूप में देखा जाता था।

2. वंश के आधार पर बने सामाजिक समूहों की विशेषताएं हैं:

i. वंश समूह स्थायी सामाजिक इकाइयाँ हैं, जिनके सदस्य समान पूर्वजों से सम्बंधित होने का दावा करते हैं।

ii. वंश समूह महत्वपूर्ण निगमित कार्य करते हैं जैसे भूमि स्वामित्व, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और पारस्परिक सहायता और समर्थन।

iii. वंश समूह राज्यविहीन समाजों में राजनीतिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए कार्यतंत्र के समान थे।

पअ. वंश समूह स्थायी सामाजिक इकाइयाँ हैं, जिनके सदस्य समान पूर्वजों से सम्बंधित होने का दावा करते हैं। समूह की सदस्यता जन्म के समय निर्धारित की जाती है और यह आजीवन सदस्यता है। वंश समूह समय के साथ बना रहता है भले ही सदस्यता बदल जाए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

1.खंडीय वंश सामाजिक संगठन का एक मॉडल है जो नातेदारी वंश की एक शाखा प्रणाली पर आधारित है। वंश एक नातेदारी समूह है जो पुरुष श्रंखला में वंशानुक्रम का पता लगाता है। इवांस–प्रिचर्ड ने नुएर कुल/कबीले को अत्यधिक खंडित बताया है। खंड वंशावली विषयक संरचनाएं हैं, और इसलिए हम उन्हें वंशपरंपरा के रूप में संदर्भित करते हैं। यद्यपि कुलों/कबीलों को खंडों में विभाजित किया गया है, लेकिन इसके वंश एक दूसरे के संबंध में अलग–अलग समूह हैं। आदिवासी समाज में, खंडीय वंश व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्थान है, खासकर उन जनजातीय समाजों में जहां वंश समूह पुरुष श्रंखला के माध्यम से वंशपरम्परा पर आधारित होते हैं। ये अज्ञेय समूह समाज के आर्थिक और राजनीतिक कामकाज के लिए जिम्मेदार होते हैं। भूमि और जल स्रोतों जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों पर पितृवंश का सामूहिक स्वामित्व या विशेष दावा होता है। खंडीय वंशपरम्परा समाज में पाई जाती है जहाँ व्यवस्थित राजनीतिक संस्था का अभाव होता है। और यहाँ तक कि एक स्थिर सरकार के बिना भी, वंश विभाजन कबीले के सदस्यों के बीच दुर्जेय संबंध बनाए रखने में मदद करता है।

2. मेयर फोर्ट्स ने वंश और पुत्रत्व (दत्तकग्रहण) के बीच अंतर किया। वंश एक व्यक्ति और उसके किसी पूर्वज(पुरुष)/पूर्वज(स्त्री) के बीच मान्यता प्राप्त वंशावली संबंध को संदर्भित करता है। पुत्रत्व (दत्तकग्रहण) उस संबंध को संदर्भित करता है जिसे एक व्यक्ति एक निर्दिष्ट माता–पिता की संतान होने के तथ्य के रूप में विकसित करता है। यह किसी के माता–पिता की वैध संतान होने के तथ्य से निर्मित संबंध को दर्शाता है। वंश एकरेखीय हो सकता है लेकिन पुत्रत्व (दत्तकग्रहण) हमेशा द्विपक्षीय होता है, उसे दोनों ही माता–पिता से लगाव होता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 गठबंधन (संबंध) •

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 विनिमय के एक रूप में विवाह

4.3 गठबंधन के नियम

4.3.1 निषिद्ध निकटाभिगमन

4.3.2 बहिर्विवाह

4.4 लेवी-स्ट्रास: प्राथमिक या सरल और जटिल संरचनाएँ

4.5 लुई ड्यूमा: द्रविड़ नातेदारी

4.6 रॉडनी नीधम – गठबंधन के नए दृष्टिकोण का विकास

4.7 सारांश

4.8 संदर्भ

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

• Written by Dr. Archana Prasad, Delhi University , New Delhi

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य गठबंधन के दृष्टिकोण से नातेदारी प्रणाली के अध्ययन की समझ विकसित करना है। इसे पढ़ने के बाद आप:

- गठबंधन दृष्टिकोण और नातेदारी तथा विवाह के नियमों में उसकी महत्ता को समझ सकेंगे/संकेंगी।
- लेवी-स्ट्रास द्वारा विकसित की गई जटिल नातेदारी संरचना के बारे में चर्चा कर सकेंगे/संकेंगी।
- लुई ड्यूमा द्वारा द्रावीड़ नातेदारी के बारे में की गई व्याख्या की जानकारी पा सकेंगे/सकेंगी।
- रॉडनी नीधम द्वारा किए गए संशोधन के बारे में बता सकेंगे/सकेंगी।
- नातेदारी अध्ययन के गठबंधन दृष्टिकोण की प्रमुख खासियतों की चर्चा कर सकेंगे/सकेंगी।

4.1 **प्रस्तावना**

विवाह, रक्त और सामाजिक , इन तीन तरह के संबंधों से नातेदारी प्रणाली बनती है। जाहिर है कि इसके अध्ययन के लिए तीन दृष्टिकोण का उपयोग किया जा सकता है – एफाइनल (वैवाहिक/रिश्तेदारी), कोंसंगुइनल (रक्त/जैविक) और सांस्कृतिक। 1940 से 1960 के दशक के दौरान ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञान में वंशवादी दृष्टिकोण हावी था। यह पूर्ववर्ती मानववैज्ञानिक सिद्धांतों से विकसित हुआ था , जिनकी केंद्रीय चिंता नातेदारी और क्षेत्र तथा परिवार और परिजनों के बीच के संबंध थीं। वंशवादी विचारधारा नातेदारी व्यवहार की व्याख्या , समूह के कार्य/भूमिका, भाई-बहन एकजुटता (सिबलिंग सॉलिडिरिटी) और एगनेटिक (पुरुष/पिता पक्ष की तरफ के संबंधी) एकता के पदों में करती थी। वह स्थानीय समूहों, नातेदारी संबंधों, विवाह संबंधी नियमों , आवास, उत्तराधिकार और विरासत जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित कराती थी।

गठजोड़ दृष्टिकोण वंश के दृष्टिकोण के बाद विकसित हुआ है। यह वंश आधारित दृष्टिकोण की इस आधार पर आलोचना करता है कि उसमें रक्त-संबंधों को अधिक तरजीह दिया जाता है और विवाह-संबंधों के प्रति उदासीनता

बरती जाती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार नातेदारी के कई घटक होते हैं, यथा - वंश, उत्तराधिकार, विवाह, वैवाहिक-संबंध (एफीनिटी), आवास। लेवी-स्ट्रॉस ने अपनी किताब *द एलीमेंट्री स्ट्रक्चर ऑफ किनशिप* और ड्यूमा ने अपनी किताब *मैरिज अलायंस* में गठबंधन दृष्टिकोण का विवेचन किया है। नातेदारी अध्ययन के गठबंधन दृष्टिकोण की प्रमुख खासियतें निम्नलिखित हैं :

- निषिद्ध निकटाभिगमन यानी निकटवर्ती परिजनों के दायरे के बाहर विवाह का नियम जो कि लगभग सभी समाजों में पाया जाता है।
- जनजातीय समाजों में उक्त दायरा वंश या कबीला होता है।
- विभिन्न वंशों के बीच विवाह-संबंध कायम करने के माध्यम से यह नियम समाज को एक सूत्र में बांधने का काम करता है।
- सबसे बुनियादी रूप सममित गठबंधन है , जिसमें दो वंश या अर्धांश समूह आपस में स्त्रियों का विनिमयकरते हैं लेवी-स्ट्रास ने इसे निषेधयुक्त विनिमयभी कहा और इसे असंगत के रूप में देखा , कारण विवाह गठबंधन द्वारा इसमें केवल दो समूह जुड़ते हैं।
- दूसरा रूप असममित गठबंधन है। इसमें पत्नी-देने वाला वंश और पत्नी लेने वाले वंश के बीच भेद बरता जाता है और विवाह संबंध इस तरह कायम किए जाते हैं कि सिद्धान्तत: सभी वंश एक –दूसरे से जुड़कर एक शृंखला-सा बनाते हों। लेवी-स्ट्रास ने इसे समानता-युक्त (harmonious) विनिमय भी कहा। यह हाईलैंड दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में पाया जाता है।

4.2 **विवाह: विनिमय का एक रूप**

लुई ड्यूमा के अनुसार, 'गठबंधन' से बड़े या छोटे समूहों के बीच विवाह की पुनरावृत्ति का बोध होता है। लेवी-स्ट्रॉस बताते हैं कि जिन समाजों में क्रॉस-कजिन विवाह का चलन है, उनके अध्ययन के लिए गठबंधन की अवधारणा विकसित की गई थी। लेवी-स्ट्रॉस के अनुसार विवाह के ये रूप समूहों के बीच महिलाओं की विनिमय-प्रणाली के विशिष्ट पहलू हैं जो उनके बीच स्थायी विवाह गठबंधन का निर्माण करते हैं। उन्होंने महिलाओं के विनिमय को

विनिमय का बुनियादी रूप कहा जो उपहारों के प्रतीकात्मक विनिमय से पहले वजूद में आया। प्रजनन की क्षमता से लैस होने के कारण महिलाओं का विनिमय , उपहारों के विनिमय के बीच सर्वोच्च माना गया। अपने करीबी समूह के पुरुषों के साथ यौन-संबंध की मनाही के निषिद्ध निकटाभिगमन नियम के कारण महिला रूपी उपहार का विनिमय करना पड़ता है। इस प्रकार, पारस्परिकता और निषिद्ध निकटाभिगमन , इन जुड़वे नियमों की परिणति महिलाओं के विनिमय द्वारा वैवाहिक गठबंधन के रूप में हुई। विनिमय के रूप में विवाह हमें दो समूहों (सामाज के श्रेणीक्रम में स्थित पत्नी-देने वाला और पत्नी लेने वाला) के बीच भेद करने में मदद करता है। इन दोनों समूहों की हैसियत वंश-प्रणाली पर निर्भर करती है। पितृवंशीय समाज में पत्नी-लेने वाले की हैसियत पत्नी-देने वाले की तुलना में उच्च मानी जाती है। वहीं, मातृवंशीय समाज में स्थिति ठीक विपरीत है।

4.3 विवाह के नियम

विवाह का प्रयोजन केवल यौन-संबंध और प्रजनन नहीं है। इससे लोगों के समूहों के नेटवर्क के बीच गठबंधन भी मजबूत होता है। गठबंधन कायम करने के कुछ नियम या दिशानिर्देश होते हैं जो बताते हैं कि विवाह किससे की जा सकती है और किससे नहीं। यानी विवाह के लिए किसे वरीयता दी जाए और किस का निषेध किया जाए। निषिद्ध निकटाभिगमन और बहिर्विवाह ऐसे नियमों के बीच में प्राथमिक स्थान रखते हैं।

4.3.1 निषिद्ध निकटाभिगमन

कुछ निश्चित सामाजिक श्रेणियों के बीच सहवास को निषिद्ध मानने वाला निषिद्ध निकटाभिगमन का नियम सबसे महत्वपूर्ण नियम है। पश्चिम में इसके अंतर्गत केवल माता-पिता और बच्चे तथा भाई-बहन आते हैं। इसके विपरीत *न्यूर* की अवधारणा *रुरल,* जिसे एवांस पिचार्ड ने विकसित किया , के मुताबिक कबीला , माता-पिता के पिछली छह पीढ़ियों के परिजन और अपने वंश में अन्य पुरुष से विवाह करने वालों के बीच सहवास निषिद्ध है। निषेध का दायरा संकीर्ण हो या विस्तृत , निषिद्ध निकटाभिगमन नियम का मूल सिद्धांत यह है जिनके बीच यौन-संबंध या सहवास निषिद्ध है उनके बीच विवाह भी नहीं हो सकता। लेवी-स्ट्रॉस ने इस निषेध को सकारात्मक दृष्टि से देखा है। समूह के

भीतर यौन-संबंध पर रोक का नियम, पुरुष को समूह के बाहर पत्नी की तलाश के लिए उन्मुख करता है। इस नियम के चलते पुरुष अपने समूह की महिला से विवाह नहीं कर पाते हैं। नतीजतन पत्नी के लिए वे दूसरे समूह की ओर देखते हैं। बदले में उन्हें अपने समूह की बेटी या बहन देनी होती है। इस प्रकार निषिद्ध निकटाभिगमन का नियम न केवल विवाह के लिए अन्य समूह से पति या पत्नी की तलाश की स्थिति उत्पन्न करता है बल्कि यह दो या दो से अधिक समूहों के बीच गठबंधन को भी मुमकिन कर , उनके बीच एकजुटता पैदा करता है। लेवी-स्ट्रॉस के निषिद्ध निकटाभिगमन को सकारात्मक मानने में वैवाहिक-नियमों और और यौन-संबंध के नियमों को एक-दूसरे का पर्याय मानना निहित है। जबकि कुछ समाजों में कुछ परिजनों के बीच यौन -संबंध की तो अनुमति है, लेकिन उनके बीच विवाह सख्त वर्जित है। निषिद्ध निकटाभिगमन के अलावा, बहिर्विवाह का नियम विवाह को नियंत्रित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण नियमों में से एक है।

4.3.2 **बहिर्विवाह का नियम**

बहिर्विवाह का नियम किसी समूह विशेष के दायरे में विवाह पर प्रतिबंध लगाता है और इस तरह, समूह के बाहर विवाह संबंध कायम करने को निर्देशित करता है। बहिर्विवाह के नियम का काम दो परिवारों के बीच विनिमय स्थापित करना और उन्हें एक वृहत्तर सामाजिक संरचना में एकीकृत करना है। कई समाजों में , यह नियम न केवल निकट के बल्कि दूर के रक्त-संबंधों और संपार्श्विक (कोलैटरल) संबंधों को भी संज्ञान में लेता है। निषिद्ध निकटाभिगमन और बहिर्विवाह के नियम को निषेध और अनुमोदन के रूप में समझा जा सकता है, जो गठबंधन दृष्टिकोण को समझने में मदद करता है। सभी समाजों में कुछ संबंधियों के साथ विवाह की मनाही होती है तो कुछ के साथ विवाह का निर्देश/अनुमोदन रहता है। अनुमोदन करता नियम विवाह का सकारात्मक नियम है जबकि निषेध करता नियम विवाह का नकारात्मक नियम है। उदाहरण के लिए, द्राविड़ नातेदारी में क्रॉस-कजिन (ममेरे-फुफेरे) विवाह को अनुमोदन प्राप्त है और पैरेलेल कजिन (चचेरे-मौसेरे) विवाह पर निषेध है। लेवी-स्ट्रॉस के मुताबिक सकारात्मक विवाह-नियम वाले समाजों की नातेदारी संरचना प्रारंभिक या सरल होती है और नकारात्मक विवाह -नियम वाले समाजों की नातेदारी संरचना जटिल होती है। गठबंधन सिद्धांत को उन नातेदारी प्रणालियों को समझने के लिए विकसित किया गया है जिनमें विवाह के नियम सकारात्मक होते हैं।

4. 4 **लेवी-स्ट्रास: प्राथमिक या सरल और जटिल संरचनाएँ**

अपनी पुस्तक *द एलीमेंटरी स्ट्रक्चर्स ऑफ किनशिप* में लेवी स्ट्रॉस ने कहा कि 'नातेदारी इकाई का आरंभिक और सरलतम चरित्र निषिद्ध निकटाभिगमन का नतीजा है'। इस निषेध का उद्देश्य और कुछ नहीं बल्कि महिलाओं का वितरण या विनिमय का अनुमोदन है। इस निषेध की सार्वभौमिक मौजूदगी के कारण कोई वंश-समूह और परिवार खुद की बदौलत आगे विकसित नहीं हो सकता था। सभी दूसरे वंश-समूह और परिवार के साथ संबंध बनाने या गठबंधन के लिए मजबूर थे। इस तरह, लेवी-स्ट्रॉस के लिए वंशानुक्रम की तुलना में गठबंधन की महत्ता प्राथमिक जगह ले लेती है कारण नातेदारी की कार्यप्रणाली के केंद्र में और कुछ नहीं बल्कि दो या दो से अधिक समूहों के बीच महिलाओं का विनिमय रहता है।

महिलाओं का विनिमय विवाह के नियम पर निर्भर करता था। इसके आधार पर लेवी-स्ट्रॉस ने विनिमय के दो अलग-अलग संरचनात्मक "मॉडल" के बीच अंतर किया।

1) **प्राथमिक/सरल संरचना**- सकारात्मक विवाह नियमों का पालन करने वाले समाज, जो बताते हैं कि विवाह किससे किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए क्रॉस-कजिन वैवाहिक साथी। यह ऑस्ट्रेलियाई मूलनिवासियों, दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों , दक्षिणी भारत और दक्षिण अमेरिका के मूलनिवासियों के बीच पाया जाता है।

दो प्रकार के कजिन
पैरेलल कजिन्स (मौसेरे चचेरे भाई-बहन) - माता के बहन की बेटी/बेटे और पिता के भाई की बेटी/बेटे
क्रॉस कजिन्स (ममेरे फुफेरे बाई बहन) – माता के भाई की बेटी/बेटे और पिता की बहन की बेटी/बेटे

2) **जटिल संरचना -** नकारात्मक विवाह नियम क पालन यानी किसी निश्चित श्रेणी के सदस्य से विवाह पर प्रतिबंध। इस तरह का नियम पैरेलल कजिन्स , सहोदर भाई-बहन और माता-पिता के साथ विवाह पर प्रतिबंध लगता है। यह यूरोप, अफ्रीका और इनुइट/एस्किमो के बीच पाया जाता है।

अपनी चर्चा में, लेवी-स्ट्रॉस ने प्राथमिक संरचना पर अधिक ध्यान दिया है और विवाह नियमों को ऐसी संस्था कहा है जो समाज को एक साथ बांधती हैं। ऐसा कैसे होता है, यह प्रदर्शित करने के लिए, वे प्राथमिक संरचनाओं के दो प्रकार की बात करते हैं – **सामान्यीकृत विनिमय और प्रतिबंधित विनिमय**।

सामान्यीकृत विनिमय में ऐसे समूहों के बीच विवाह को तरजीह दी जाती है जो विवाहित जोड़े परिवार से बड़े होते हैं। इसमें तीन या तीन से अधिक समूह शामिल होते हैं और महिलाओं का विनिमय एक दिशा (एकदिशीय) में होता है। यदि हम ऐसे तीन समूह को अ , ब और स कहें तो महिलाओं के विनिमय की दिशा इस प्रकार की होगी- समूह अ अपनी महिला समूह ब को देता है , समूह ब समूह स को और समूह स समूह अ को। इस तरह , विनिमय एक चक्र या वृत्त क रूप लेता है।

सामान्यीकृत विनिमय को असममित (Asymmetrical) या असमानता-युक्त (disharmonic) भी कहा जाता है , कारण पत्नी देने वाले और लेने वाले समूह के बीच समानता नहीं होती।

सामान्यीकृत विनिमय

असममित (Asymmetrical) विनिमयका उदाहरण: असम के पुरुम

- पुरुम के बीच श्रेणीकृत वंश प्रणाली है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण नियम यह है कि पत्नी देने वाला वंश पत्नी लेने वाले से पत्नी नहीं ले सकता।
- इसलिए सभी वंश इस प्रकार विभाजित हैं:
  - पत्नी देने वाले वंश
  - पत्नी लेने वाले वंश
  - अपना वंश
  - अन्य वंश जिनके साथ विवाह नहीं हुआ हो
- विवाह माता के भाई की बेटी के साथ होत है।
- इसलिए महिलाएं एक दिशा में गतिशील होती हैं जबकि समान वधू-सेवाएँ विपरीत दिशा में।

प्रतिबंधित विनिमय - इस प्रकार के विनिमय में परिवार छोड़कर, दो परिजन-समूह एक-दूसरे के साथ वैवाहिक साथी का आदान-प्रदान करते हैं। एक समूह के पुरुष दूसरे समूह की महिलाओं से विवाह करते हैं और दूसरे समूह

के पुरुष पहले समूह की महिलाओं से। इस तरह की प्रणाली दुनिया के सभी हिस्सों में पाई जाती है लेकिन खासकर ऑस्ट्रेलिया के मूलानिवासियों के बीच इसका खासा चलन है। यदि हम समूहों को अ, ब, स और द से निरूपित करें, तो विवाह के नियम को निम्नलिखित चित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है:

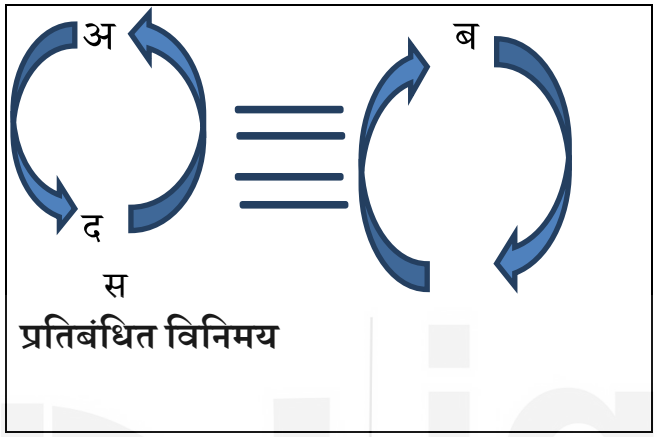

आरेख में दोहरी लाइनें उन समूहों के वर्गों के जोड़े को दर्शाती हैं जो एक-दूसरे को को वैवाहिक साथियों (अ और ब , स और द) की आपूर्ति करते हैं। सभी चार समूह एक-दूसरे के साथ इस तरह जुड़े होते हैं कि बच्चे, माता या पिता किसी के भी समूह के नहीं होते। उदाहरण के लिए, यदि समूह अ का पुरुष समूह ब की महिला से विवाह करता है तो उनके बच्चे समूह स के हो जाते हैं। वहीं, यदि समूह अ की महिला समूह स के पुरुष से विवाह करती है तो उनके बच्चे समूह द के हो जाते हैं। इसी तरह , समूह स और द के बीच के विवाह-संबंधों से जन्मी संतानें समूह अ और ब की हो जाती हैं। समूह अ की महिला समूह स के पुरुष से विवाह करती है, तो उनके बच्चे समूह द के हो जाते हैं। बच्चे पिता-माता के आधार पर अ या ब से संबद्ध होते हैं। अ या ब क भी भी स या द के साथ सीधे विवाह नहीं करते हैं। रैडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, ये समूह स्थानीय समूह नहीं बल्कि स्टेटस समूह होते हैं जिनके सदस्यों को किसी अन्य समूह के सदस्यों से विवाह करना होता है। यहां पारस्परिकता प्रत्यक्ष और तात्कालिक है। इसे सममित (symmetrical), प्रत्यक्ष या समानता-युक्त विनिमय के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि महिलाओं का विनिमय करने वाले दो समूहों के बीच पारस्परिकता का संबंध होता है।

सममित (Symmetrical) विनिमयका उदाहरण: ऑस्ट्रेलिया के करीरा

• ऑस्ट्रेलिया का करीरा समाज मातृवंशीय समाज है। यह प्रतिबंधित विनिमय का पालन करता है।

• उनमें चार खंडीय प्रणाली है, जिसमें दो खंड दो या उससे अधिक पीढ़ियों में विभाजित हैं।

• उन चार खंडों के नाम इस प्रकार हैं - *करीमेरा* और *बुरुंग* तथा *पलियेरी* और *बनाका*।

• दोनों आपस में पत्नियों का विनिमय करते हैं; यानी करीमेरा और पलि येरी आपस में महिलाओं का विनिमयकरते हैं। इसी तरह, *बुरुंग* और *बनाका* भी आपस में महिलाओं का विनिमय करते हैं।

• *करीमेरा* पुरुष और *पलियेरी* महिला के बच्चे *बुरुंग* होते हैं; इसी तरह, *बुरुंग* पुरुष और *बनाका* महिला के बच्चे करीमेरा होते हैं। अगर हम महिलाओं पर विचार करते हैं , तो इसके विपरीत, क्योंकि यह एक पितृवंशीय समाज है।

• समूचा समाज दो भागों 'हम' (जिनसे विवाह नहीं हो सकता) और 'वे'(जिनसे विवाह हो सकता है) में विभाजित है।

बोध प्रश्न 1

नोट: अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) प्राथमिक/सरल नातेदारी के दो प्रकारों की तुलना करते हुए अंतर बताएं।

---

2) ऑस्ट्रेलिया के करीरा समाज में प्रचलित सममित विनिमय की ख़ासियतें बताएं।

4.5 लुई ड्यूमॉ- द्रविड़ नातेदारी

लुई ड्यूमॉ ने द्रविड़ नातेदारी का अध्ययन विवाह की अभिव्यक्ति के रूप में किया। उन्होंने वैवाहिक-संबंधों को एक स्थायी प्रणाली के रूप में देखा जिसके माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरंतरता बनी रहती है। उनकी मुख्य थीसिस यह थी कि नातेदारी शब्दावली वंश के बजाय गठबंधन का प्रतिबिंब है। दक्षिण भारत में तमिल कल्लार नातेदारी प्रणाली के अपने अध्ययन में ड्यूमॉ ने दिखाया कि उसमें क्रॉस-कजिन विवाह को प्राथमिकता देने क नियम है। अर्थात इस नातेदारी में साफ तौर पर यह नियम है पुरुष को ऐसी महिला से विवाह करनी चाहिए जो या तो उसकी वास्तविक क्रॉस-कजिन हो या फिर, नातेदारी शब्दावली द्वारा उसी श्रेणी में स्थित की गई महिला हो। इस प्रकार, द्रविड़ नातेदारी शब्दावली स्पष्ट रूप से क्रॉस-कजिन विवाह नियमों से जुड़ी है। क्रॉस-कजिन विवाह नियम का यह परिणाम होता है कि वैवाहिक-संबंध एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं। यदि पीढ़ियों के बीच सभी हस्तांतरण केवल एक ही दिशा में होते हैं , तो इसे समानता-युक्त के रूप में जाना जाता है। यदि कुछ विशेषताएँ पितृवंशीय रूप से और कुछ मातृवंशीय रूप से हस्तांतरित होते हैं तो उसे असमानता-युक्त प्रणाली कहा जाता है। ड्यूमॉ का तर्क है कि इस तरह, वैवाहिकता को एक कालक्रमित (diachronic) आयाम मिलता है जो कि पश्चिमी समाजों में केवल रक्त-संबंधों को हासिल है। उन्होंने तीन तरह के क्रॉस-कजिन विवाह की बात की:

1. द्विपक्षीय क्रॉस कज़िन विवाह: इसमें कोई व्यक्ति (ईगो) अपने मामा की बेटी से विवाह करता है, जो उसकी फूफी की बेटी होती है। दूसरे शब्दों में, इस तरह के विवाह में दो समूह आपस में अपनी-अपनी महिलाओं का एक-दूसरे के साथ पत्नी के रूप में विनिमय करते हैं और इस तरह, दोनों मिलकर एक आत्मनिर्भर इकाई का गठन करते हैं। इसे बहन-विनिमय के रूप में भी जाना जाता है। लेवी-स्ट्रॉस ने इस प्रकार के विनिमयको बंद या प्रतिबंधित विनिमय कहा और इसे असमानता-युक्त हस्तांतरण के साथ जोड़ कर देखा।

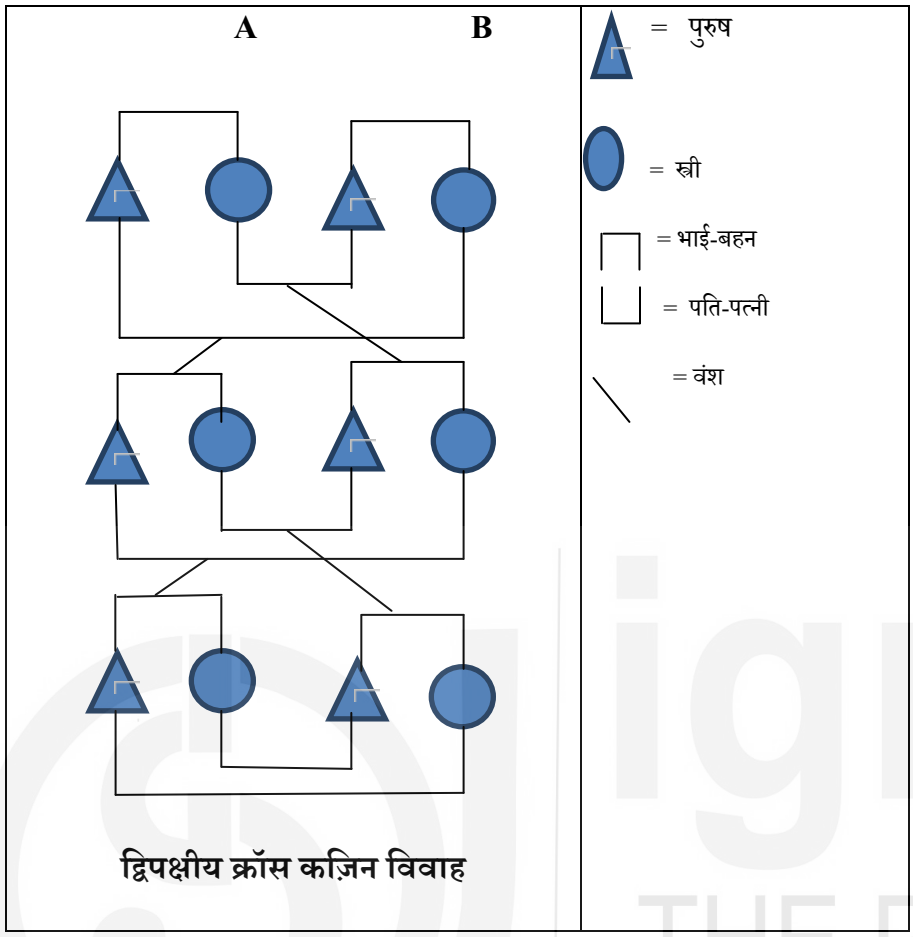

द्विपक्षीय क्रॉस कज़िन विवाह

द्विपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह के नियमित प्रयोग से एक जोड़े वंशों (अ और ब के बीच महिलाओं और पुरुषों के बीच निरंतर पारस्परिक विवाह) के बीच स्थाई गठबंधन बनता है। इस व्यवस्था को अक्सर अर्द्धांश (moiety) प्रणाली के रूप में व्यक्त किया जाता है, जिसमें बुनियादी सामाजिक इकाइयां वैवाहिक संबंधों से जुड़े दो समूहों से बनी होती हैं। अमेजोनिया के यानोमामो इसका उदाहरण हैं। उनकी मूल सामाजिक इकाई गांव होता है जिसमें 50 से लेकर 200 निवासी रहते हैं। ऐसी प्रत्येक बस्ती दो स्थानीकृत पितृवंशीय समूहों या अर्द्धांशों से बनी होती है।

2. मातृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह- इसमें व्यक्ति (इगो) अपनी माता के भाई की बेटी से विवाह करता है , जो उसकी मातृपक्षीय क्रॉस कजिन है। यदि यह नियम सभी के लिए लगातार लागू किया जाता है , तो पिछली पीढ़ी में स्थापित वंश, अंतर्विवाह का पैटर्न बिल्कुल दुहराता है। वंश ब का पुरुष, वंश अ की महिला से विवाह करता है, जो कि उसके पिता और माता के विवाह की पुनरावृत्ति होती है। इस पैटर्न को अन्य सभी वंशों के लिए उसी तरह दोहराया जाता है, जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दर्शाया गया है।

अगली पीढ़ी में भी समान क्रॉस-कजिन नियम के प्रयोग के कारण पिछली दो पीढ़ियों कि तरह महिलाओं का उसी वंश में हस्तांतरण जारी रहता है। जहाँ द्विपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह की परिणति एक जोड़े वंशों के बीच विनिमय और गठबंधन में होती है, वहीं मातृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह में कई वंशों के बीच निरंतर चक्रीय विनिमय हो सकता है।

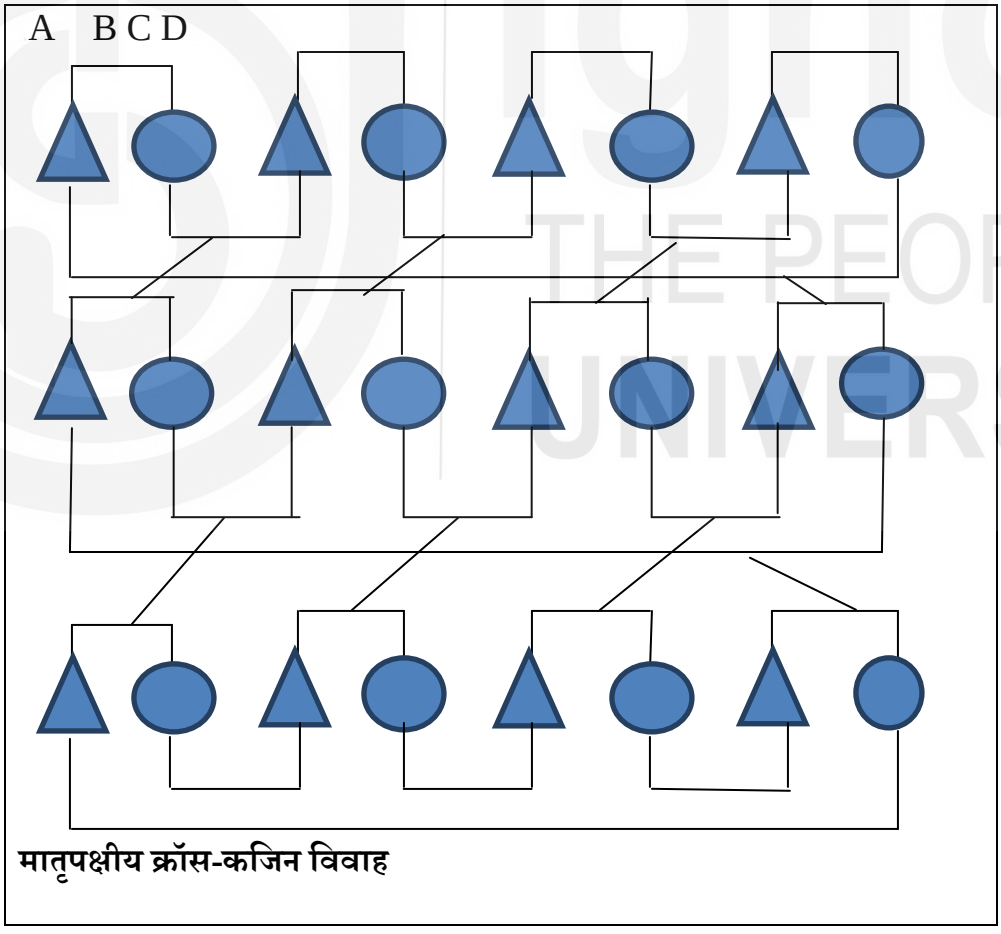

मातृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह

3. पितृपक्षीय क्रॉस कजिन मैरिज: इस तरह के नियम के मुताबिक व्यक्ति के लिए अपने पिता की बहन की बेटी या पितृपक्षीय कजिन से विवाह करना अनिवार्य होता है। नीचे दिए गए चित्र में , वंश **अ** का पुरुष वंश **ब** की महिला से विवाह करता है, वंश **ब** का पुरुष वंश **स** की महिला से विवाह करता है और वंश **स** का पुरुष वंश **अ** की महिला से। महिलाओं का विनिमय मातृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह के समान ही एक चक्रीय कॉननबियम (connubium) बनाता है। लेकिन इस मामले में भेद यह है कि महिलाओं के स्थानांतरण की दिशा हर पीढ़ी में इस तरह से बदलती है कि यह हर दूसरी दिशा में समान रहती है, जैसा कि नीचे के चित्र में तीर का चिन्ह इंगित करता है।

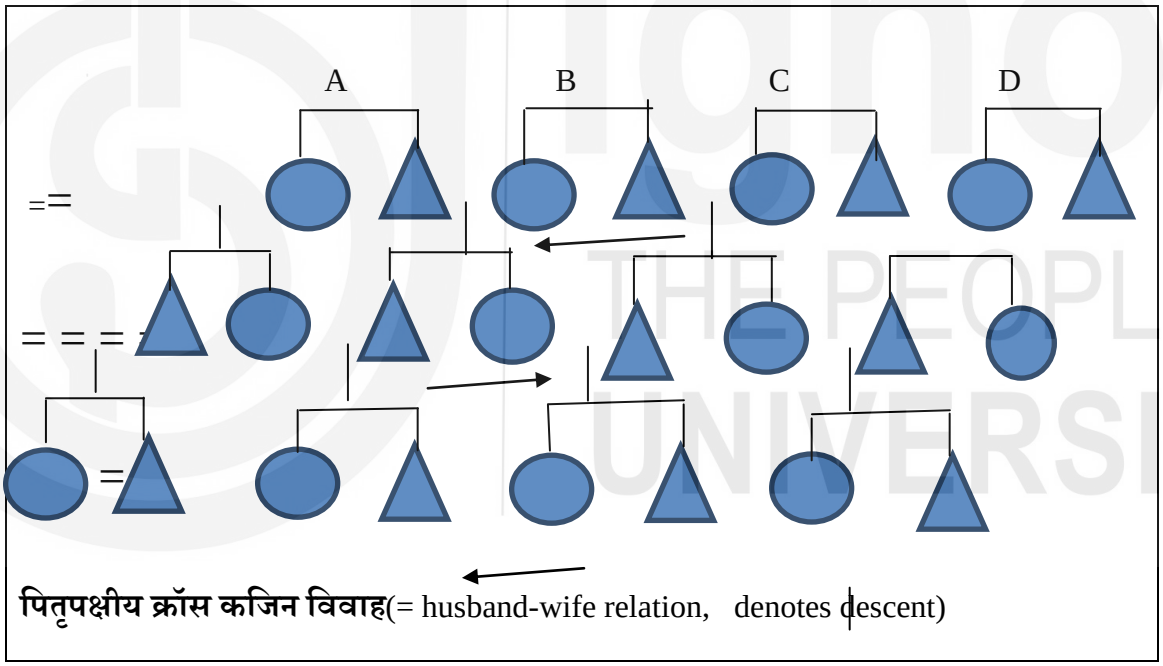

पितृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह(= husband-wife relation, denotes descent)

मातृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह सामान्यीकृत विनिमय के एक वृहद चक्र की ओर ले जाता है, जबकि पितृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह में चक्र छोटा होता है। वृहद चक्र छोटे चक्र की तुलना में अधिक एकजुटता को बढ़ावा देता है क्योंकि इसमें बनने वाले गठबंधन में ज्यादा नातेदारी समूह शामिल रहते हैं। लेवी-स्ट्रॉस के अनुसार, एथनोग्राफिक वृत्तांतों में मातृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह की प्रचुरता का यही कारण है।

बोध प्रश्न 2

नोट: अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) क्रॉस-कजिन विवाह की संक्षेप में चर्चा करें।

---

2) मातृपक्षीय और पितृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह के बीच दो अंतर बताएं।

4.6 रॉडनी नीधम – गठबंधन के नए दृष्टिकोण का विकास

लेवी स्ट्रॉस के सिद्धांत की आलोचना एडमंड लीच और रोडनी नीधम ने निम्नलिखित आधारों पर की है:

1. लेवी-स्ट्रॉस महिलाओं को एक वस्तु के रूप में देखते हैं, जिसका 'विनिमय' किया जा सकता है। ऐसा वे विवाह पर केवल पुरुष की दृष्टि से विचार करते हुए करते हैं। वे निवास या नातेदारी प्रणाली के अन्य पक्षों को नजअंदाज करते हैं।

2. वे विवाह के विनिमय में निषिद्ध निकटाभिगमन और बहिर्विवाह को एक-दूसरे का पर्याय मानते हैं जो कि पुनरुक्ति है।

3. विनिमय के रूप में विवाह के उनके विचार पर दो कारणों से सवाल उठाया गया है: (अ) यह महिलाओं और संपत्ति को एक समान मान लेता हैं , जिसके तहत महिलाओं को बेशकीमती संपत्ति के रूप में देखा जाता है। (ब) इसमें महिलाओं की एजेंसी की उपेक्षा है और विनिमय पर चर्चा करते समय महिलाओं की भावना को ध्यान में नहीं रखा जाता।

4. यह विनिमय की अवधारणा की एक संकीर्ण समझ है , जिसमें विनिमय को दो व्यक्तियों के बीच सीमित करके देखा जाता है जबकि वास्तव में विनिमय अधिक व्यापक, अमूर्त और कई व्यक्तियों के समूहों के बीच हो सकता है।

5. लेवी-स्ट्रॉस मानते हैं कि निषेध, बहिर्विवाह और सकारात्मक विवाह के बीच चक्रीय संबंध होता है। वे हिस्सों और पूर्ण (whole) के बीच संबंधों को समझाने के लिए प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। यह सामाजिक यथार्थ को समझने का केवल एक तरीका हो सकता है, जो जरूरी नहीं कि हमेशा सच हो।

उपरोक्त सीमाओं के कारण , लेवी-स्ट्रॉस के गठजोड़ के सिद्धांत में रॉडनी नीडम ने संशोधन कर उसे विकसित किया। उन्होंने निम्नलिखित सुझाव दिए:

1. लेवी-स्ट्रॉस, निर्देशित और वरीयता के अनुसार विवाह के नियम को कमोबेश समान मानते हैं। नीधम कहते हैं कि उनके बीच स्पष्ट भेद है। नीधम ने लेवी-स्ट्रॉस की इस आधार आलोचना की उनका गठबंधन सिद्धांत केवल निर्देशों पर गौर करता है। इसमें कुछ रिश्तेदारों को निर्धारित करने और दूसरों को प्रतिबंधित करने वाले नियम का संयोजन शामिल है। यह देखा गया है कि जो संबंध निर्धारित किए गए हैं , उन्हें प्राथमिकता नहीं दी जा सकती है। निर्देश महज विवाह के नियम न होकर नातेदारी प्रणाली की विशेषता हो सकते हैं। इसके तहत कुछ संबंधियों के लिए अनुमोदन और अन्यों के लिए निषेध होते हैं। लेकिन अनुमोदित संबंधी को प्राथमिकता नहीं भी दी जा सकती है।
2. नीधम की मुख्य देन संभवतः गठबंधन की अवधारणा का परिष्करण है। वे गठबंधन को अनुभवात्मक (एम्पिरिकल) यानी छोटे समूहों पर फोकस कर समझने की कोशिश करते हैं।
3. लेवी-स्ट्रॉस के गठबंधन की धारणा चक्रीय है। नीधम का सुझाव है कि गठबंधन द्वैतवादी (डुअलिस्टिक) होता है।
4. नीधम के मुताबिक यह जरूरी नहीं कि पत्नी देने वाले और पत्नी लेने वा ले के बीच की विपरीतता सामूहिक गतिविधि हो, यह छोटे समूहों के बीच हो सकता है न कि हमेशा वंश जैसे बड़े समूहों के बीच।

इस तरह, नीधम मानते हैं की विवाह की प्रकृति प्रतीकात्मक होती है। इसका ताल्लुक यौन संबंधों (निषेध और अनुमोदन) के नियोजन से ही नहीं बल्कि जाति की शुद्धता , जाति के निर्धारण और राजनीतिक महत्व से भी है। वे इसकी व्याख्या दक्षिण भारत के नायरों के संदर्भ में करते हैं, जिसके बारे में आपने इकाई 2 में पढ़ा। वे इस बात पर भी

प्रकाश डालते हैं कि अनुलोम विवाह (निम्न जाति की महिला का उच्च जाति के पुरुष के साथ विवाह) से बच्चे को कैसे उच्च जाति की सदस्यता और राजनीतिक सत्ता मिलती है।

बोध प्रश्न 3

नोट: अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) लेवी-स्ट्रॉस के गठबंधन सिद्धान्त की किसी भी तीन सीमाओं की चर्चा करें।

---

2) गठबंधन के दृष्टिकोण में नीधम के प्रमुख योगदान क्या हैं?

---

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

4.7 **सारांश**

इस इकाई में हमने नातेदारी-अध्ययन के गठबंधन दृष्टिकोण को समझा है। इसे लेवी-स्ट्रॉस द्वारा संरचनात्मक दृष्टिकोण से विकसित किया गया था, जिसे लुई ड्यूमॉ और रोडनी नीधम द्वारा आगे और विकसित किया गया था। हमने सीखा कि लेवी-स्ट्रॉस ने समूहों या वंशों के बीच के गठबंधन को समझने के लिए निषिद्ध निकटाभिगमन और बहिर्विवाह की सांस्कृतिक प्रथा के हवाले से महिलाओं के विनिमय का उल्लेख किया। उन्होंने आगे संरचनात्मक मॉडल- प्राथमिक और जटिल - के संदर्भ में महिलाओं के विनिमय को विस्तारित किया। द्रविड़ नातेदारी पर किए गए अपने अध्ययन में लुई ड्यूमॉ ने यह दलील दी कि नातेदारी प्रणाली को समझने में वंश या वंशवाद जितना महत्वपूर्ण था उतना ही वैवाहिक-संबंध भी। द्रविड़ विवाह नियम क्रॉस-कजिन विवाह पर आधारित थे । उन्होंने तीन प्रकार के क्रॉस-कजिन विवाह की बात की - द्विपक्षीय, मातृपक्षीय और पितृपक्षीय। बाद में, नीधम ने अनुमोदन और प्राथमिकता जैसे आयामों को जोड़कर गठबंधन दृष्टिकोण को और भी परिष्कृत किया।

4.8 संदर्भ

1. ड्यूमॉ, एल, 1968, 'मैरिज एलायंस', डी.शिल्स (सं.), *इन्टरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ द सोशल साइंसेज,* यू.एस.ए., मैकमिलन एंड फ्री प्रेस, पृ. 19-23
2. गफ, कैथलीन, 1959, 'द नायर एंड द डेफिनिशन ऑफ द मैरिज', *द जर्नल ऑफ द रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड*, 89: 23-34
3. नीधम, रोडनी, 1971, (सं.), *रिथिंकिंग किनशिप एंड मैरिज,* लंदन: टेविस्टॉक
4. लेवी-स्ट्रॉस, क्लाउड, 1969, *द एलिमेंटरी स्ट्रक्चर्स ऑफ किनशिप*, लंदन: आइरे एंड स्पोटिसवोड, अध्याय 1 और 2, पृ. 3-25

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1 के उत्तर

1) प्राथमिक या सरल नातेदारी के दो तरह के विनिमय

	सामान्यीकृत विनिमय	**प्रतिबंधित विनिमय**
1.	वंश और और निवास का नियम समान है, प्रणाली पितृस्थानिक और समानतायुक्त है। यानी पितृस्थानिक निवास के साथ पितृवंशीय।	वंश और और निवास का नियम समान नहीं होता यानी असमानतायुक्त
2.	पारस्परिकता अप्रत्यक्ष और विलंबित होती है, समूह उस समूह से महिला नहीं लेता है जिसे उसने महिला दी है	पारस्परिकता प्रत्यक्ष और तय होती है यानी कोई समूह जिस समूह को महिला देता है उससे लेता भी है।
3.	या तो मातृपक्षीय क्रॉस-कजिन (माता के भाई की बेटी) या पितृपक्षीय क्रॉस-कजिन (पिता की बहन की बेटी) के साथ विवाह	व्यक्ति का द्विपक्षीय क्रॉस-कजिन से विवाह

2) ऑस्ट्रेलिया के करीरा समाज में प्रचलित असममित विनिमय की खासियतें निम्न हैं:

- प्रतिबंधित विनिमय-युक्त पितृवंशीय समाज। उनमें चार खंडीय प्रणाली है जिसमें दो खंड दो या अधिक में पीढ़ियों में विभाजित होते हैं।
- चार खंड इस प्रकार हैं - *करीमेरा* और *बुरुंग* तथा *पलियेरी* और *बनाका।*
- दोनों आपस में पत्नियों का विनिमय करते हैं ; यानी करीमेरा और पलि येरी आपस में महिलाओं का विनिमयकरते हैं। इसी तरह, *बुरुंग* और *बनाका* भी आपस में महिलाओं का विनिमय करते हैं।
- *करीमेरा* पुरुष और *पलियेरी* महिला के बच्चे *बुरुंग* होते हैं; इसी तरह, *बुरुंग* पुरुष और *बनाका* महिला के बच्चे करीमेरा होते हैं। अगर हम महिलाओं पर विचार करते हैं, तो स्थिति इसके विपरीत होती है, क्योंकि यह एक पितृवंशीय समाज है।

बोध प्रश्न 2 के उत्तर

1. इसमें व्यक्ति (ईगो) अपने मामा की बेटी से विवाह करता है, जो उसकी फूफी की बेटी होती है। दूसरे शब्दों में, इस तरह के विवाह में दो समूह आपस में अपनी-अपनी महिलाओं का एक-दूसरे के साथ पत्नी के रूप में

विनिमय करते हैं और इस तरह, दोनों मिलकर एक आत्मनिर्भर इकाई का गठन करते हैं। इसे बहन -विनिमय के रूप में भी जाना जाता है। लेवी-स्ट्रॉस ने इस प्रकार के विनिमय को बंद या प्रतिबंधित विनिमय कहा और इसे असमानता-युक्त हस्तांतरण के साथ जोड़ कर देखा।

2. मातृपक्षीय और पितृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह के बीच दो अंतर इस प्रकार हैं:

अ) पितृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह में व्यक्ति के लिए अपने पिता की बहन की बेटी या पितृपक्षीय कजिन से विवाह करना अनिवार्य होता है। मातृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह में व्यक्ति (इगो) अपनी माता के भाई की बेटी से विवाह करता है, जो उसकी मातृपक्षीय क्रॉस कजिन है।

ब) पितृपक्षीय क्रॉस-कजिन विवाह men महिलाओं के हस्तांतरण की दिशा हर दूसरी पीढ़ी में बदलती रहती है जबकि मातृपक्षीय क्रॉस कजिन विवाह में हस्तांतरण की दिशा नहीं बदलती है।

बोध प्रश्न 3 के उत्तर

1. लेवी-स्ट्रॉस के गठबंधन सिद्धांत में तीन सीमाएँ हैं:

अ) लेवी-स्ट्रॉस महिलाओं को एक वस्तु के रूप में देखते हैं, जिसका 'विनिमय' किया जा सकता है। ऐसा वे विवाह पर केवल पुरुष की दृष्टि से विचार करते हुए करते हैं। वे निवास या नातेदारी प्रणाली के अन्य पक्षों को नजअंदाज करते हैं।

आ) वे विवाह के विनिमय में निषिद्ध निकटाभिगमन और बहिर्विवाह को एक-दूसरे का पर्याय मानते हैं जो कि पुनरुक्ति है।

इ) यह विनिमय की अवधारणा की एक संकीर्ण समझ है, जिसमें विनिमय को दो व्यक्तियों के बीच सीमित करके देखा जाता है जबकि वास्तव में अधिक व्यापक, अमूर्त और कई व्यक्तियों के समूहों के बीच हो सकता है।

2. गठबंधन के दृष्टिकोण में नीधम के प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं:

अ) नीधम की मुख्य देन संभवतः गठबंधन की अवधारणा का परिष्करण है। वे गठबंधन को अनुभवात्मक (एम्पिरिकल) यानी छोटे समूहों पर फोकस कर समझने की कोशिश करते हैं।

आ) नीधम के मुताबिक यह जरूरी नहीं कि पत्नी देने वाले और पत्नी लेने वाले के बीच की विपरीतता सामूहिक गतिविधि हो, यह छोटे समूहों के बीच हो सकता है न कि हमेशा वंश जैसे बड़े समूहों के बीच।

इ) विवाह प्रकृति में प्रतीकात्मक होता है, इसलिए केवल विनिमय की दिशा की बजाय , जोर अर्थ और प्रतीकों पर दिया जाना चाहिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 5 सांस्कृतिक दृष्टिकोण

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 डेविड श्नाईडर का योगदान

5.2.1 नातेदारी की पारंपरिक समझ की आलोचना

5.2.2 सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली

5.2.3 अमेरिकी नातेदारी प्रणाली

5.3 सांस्कृतिक दृष्टिकोण की महत्ता

5.3.1 जेनेट कार्स्टन – संबद्धता की संस्कृति

5.3.2 मर्लिन स्ट्रैथरन

5.3.3 कैथ वेस्टन – चुना गया परिवार

5.4 नए नातेदारी अध्ययन

5.4.1 जैविक से परे

5.4.2 नारीवादी योगदान

5.4.3 प्रजनन की नई तकनीकी

5.5 श्नाईडर के बाद नातेदारी अध्ययन

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह बता सकेंगे/सकेंगी कि :

- नातेदारी अध्ययन में सांस्कृतिक दृष्टिकोण का क्या महत्त्व है
- नातेदारी की पारंपरिक समझ में क्या कमियाँ थीं
- नातेदारी अध्ययन में नारीवाद का क्या योगदान है
- समकालीन सदर्भ में नातेदारी की स्थिति क्या है

5.1 प्रस्तावना

मानवविज्ञान में नातेदारी को समझने के दो तरीके हैं। एक के मुताबिक, नातेदारी का विश्लेषण केवल मानव प्रजनन की जैविक आवश्यकताओं के पदों में ही किया जा सकता है। ऐसी मान्यता है कि नातेदारी, यौन–संबंध और प्रजनन पर आधारित है। इस दृष्टिकोण के समर्थक वंश और विवाह के माध्यम से संबंधों का पता लगाने पर जोर देते हैं। दूसरे के मुताबिक, जैविक का संदर्भ मानवजाति केन्द्रीयता के अलावा और कुछ नहीं है, जो यूरोपीय संस्कृति से व्युत्पन्न है। यह दृष्टिकोण नातेदारी को समाज की सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में समझने की बात करता है। इस प्रकार, नातेदारी मुख्य रूप से संस्कृति का विषय है। नातेदारी प्रजनन की जैविक प्रक्रिया से निर्मित भर न होकर उसकी व्याख्या से निर्मित होती है। पहला

दृष्टिकोण जैविक मॉडल या वंशावली दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है, जिसमें विश्लेषण के केंद्र में परिवार और विवाह रहे हैं। विवाह और प्रजनन के माध्यम से परिवार के बनने को समान रूप से होने वाली प्राकृतिक और सार्वभौमिक घटना माना जाता रहा। सांस्कृतिक दृष्टिकोण के समर्थकों के लिए, ऐसी धारणा हमेशा सच नहीं थी। उदाहरण के लिए, ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स (जिसका अध्ययन ब्रोनिस्लाव मैलिनोवस्की ने किया) के बीच सामाजिक संबंध, बिना जैविक संदर्भ के बनते हैं। उनमें लोग प्रजनन की प्रक्रिया से गुजरे बिना नातेदार बनते पाए गए। केवल जैविक के संदर्भ में नातेदारी को समझने के क्रम में परिवार और विवाह के बाहर

बने संबंधों का बड़ा दायरा छूट जाता है। इसलिए नातेदारी की 'असल' बुनियाद संस्कृति को माना जाना चाहिए न कि जैविक को।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण में सामाजिक संबंधों की पड़ताल प्रतीकों के दृष्टिकोण से की जाती है, जिसमें संबंध अंतर्निहित होते हैं। नातेदारी का अध्ययन संस्कृति की एथनोग्राफीय तहकीकात पर निर्भर करता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक दृष्टिकोण के अनुसार, नातेदारी एक सांस्कृतिक या सामाजिक निर्मिति है। वहीं जैविक दृष्टिकोण इसे प्राकृतिक और प्रदत्त मानता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण के प्रवर्तक डेविड श्नाईडर थे, जिन्होंने नातेदारी को साझे प्रतीकों और अर्थों पर आधारित सांस्कृतिक प्रणाली माना और तदनुसार उसकी पड़ताल की। नातेदारी को प्राकृतिक के दायरे से बाहर निकालने के लिए उन्होंने संस्कृति का प्रयोग इस आधार पर किया कि संबंध सांस्कृतिक रूप से बनते हैं।

5.2. डेविड श्नाईडर का योगदान

डेविड श्नाईडर एक प्रतीकवादी मानवविज्ञानी थे, जिन्होंने विशुद्ध रूप से जैविक पदों में नातेदारी की चली आ रही समझ को खारिज किया था। श्नाईडर के लिए नियम, मूल्य और प्रतीक मायने रखते थे और इसलिए उन्होंने नातेदारी को

सांस्कृतिक करार दिया। दरअसल जैविक को नातेदारी का आधार मानने की जो धारणा थी वह पश्चिमी मानवविज्ञानियों के मानस की उपज थी, न कि अध्ययन किए जा रहे समाज में पाई जाने वाली कोई हकीकत। अपनी क्लासिक कृति *अमेरिकन किनशिपः ए कल्चरल अकाउंट* में उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि 'हम अमेरिकी संस्कृति में जिसे प्रकृति मानते हैं है वह वास्तव में संस्कृति है'। उन्होंने संस्कृति को प्रतीकों और अर्थों की एक प्रणाली के रूप में परिभाषित किया और नातेदारी को प्रतीकों और अर्थों का एक समुच्चय माना। रक्त और विवाह आधारित संबंध जैसे कुछ ठोस तत्वों के संदर्भ में नातेदारी की परिभाषा को चुनौती देकर, श्नाईडर ने नातेदारी को वंशावली और घरेलू दायरे से बाहर निकाला। जैविक और वैवाहिक संबंधों के प्रतीकात्मक आयाम पर ध्यान देकर उन्होंने नातेदारी अध्ययन में

नई दिशा की शुरुआत की। इसे मानवविज्ञान में सांस्कृतिक मोड़ कहा जाता है। इसने नातेदारी को सांस्कृतिक रूप में परिभाषित किया।

5.2.1 नातेदारी की पारंपरिक समझ की आलोचना

डेविड श्नाईडर ने जैविक पहलू के एकतरफा महत्व के आधार पर नातेदारी की पश्चिमी समझ की उपयोगिता पर सवाल उठाया। उन्होंने दावा किया कि पश्चिमी मानवविज्ञानी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत अपनी उपयोगिता में सीमित थे। गैर–पश्चिमी समाज के परिवार और नातेदारी को समझने में वे उपयुक्त नहीं हो सकते थे। अपनी *किताब ए क्रिटिक ऑफ द स्टडी ऑफ किनशिप* में श्नाईडर नातेदारी को इस हद तक अमूर्त मानते हैं कि इस नाम की किसी चीज के अस्तित्व से ही इंकार करते हैं। खासकर विषमलैंगिक एकल परिवार के सार्वभौमिक मॉडल के अर्थ में, जिसमें विवाह जैविक नियमों की सामाजिक अभिव्यक्ति हो। उनके अनुसार अमेरिकी मानवविज्ञानियों की अपने समाज में व्याप्त आम अविश्वास आधारित यह पूर्वधारणा दोषपूर्ण थी कि रक्त, पानी से अधिक मूल्यवान होता है।

उन्होंने यह भी कहा कि यूरो–अमेरिकी लोक मॉडल नातेदारी को प्राकृतिक, यानी जैविक तथ्यों की सामाजिक निर्मिति समझते हैं (श्नाईडर, 1980)। बाद में, उन्होंने इसे विस्तार देते हुए प्रस्तावित किया कि नातेदारी के मानवविज्ञान ने इन मॉडलों के तहत नातेदारी की जैविक प्रकृति के बारे में स्वीकृत मान्यताओं को पुनरुत्पादित भर किया।

वे तीन आधारों पर सामाजिक मानवविज्ञानियों की आलोचना करते हैं : –

- वे केवल जैविक पहलू की बात करते हैं।
- उनका सरोकार केवल जैव–आनुवांशिक (बायोजेनेटिक) तत्वों की साझेदारी से हैं। वे साझेदारी की मात्रा या हद का अध्ययन नहीं कर रहे थे।
- संरचना और संस्कृति में कोई भेद नहीं करते हैं।

जैसा कि पहले कहा गया है कि नातेदारी जैव–आनुवंशिक तत्वों पर आधारित है, लेकिन नातेदारी संबंधों को समझने में सामाजिक पहलुओं पर भी विचार करने की आवश्यकता है।

5.2.2 सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली

श्नाईडर ने नातेदारी के अपने अध्ययन में समाज की सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली के बीच भेद किया। उन्होंने सांस्कृतिक प्रणाली को ऐसी इकाइयों (भागों) से बनी हुई प्रणाली माना, जो खास तरह से परिभाषित किए जाते हैं और जिनके बीच, विभिन्न विचारों के आधार पर भिन्नता होती है। मानक प्रणाली नियम–कायदों से बनी होती है। समाज और समुदाय में स्वीकृति पाने के लिए लोगों से उनके पालन करने की अपेक्षा की जाती है। ये दरअसल 'कैसे व्यवहार करें' से संबंधित नियम होते हैं। उदाहरण के लिए, मध्य वर्ग के एक पिता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने परिवार को सहारा देने के लिए कमाए, हालाँकि यह जरूरी नहीं कि मध्य वर्ग के सभी पिता वास्तव में ऐसा करते हों।

मानक–केंद्रित समझ के लिहाज से संस्कृति अधिक स्थिर, प्रदत्त और बहुत कम प्रक्रियात्मक प्रतीत होती है। वहीं, सांस्कृतिक प्रणाली में, संस्कृति का ताल्लुक मंच, मंच की व्यवस्था और पात्रों से रहता है जबकि मानक प्रणाली का ताल्लुक पात्रों को निर्देशित करने और उन्हें कौन–सी भूमिकाएँ निभानी हैं, उससे रहता है। इसका मतलब यह नहीं है कि मानक और सांस्कृतिक प्रणालियाँ एक–दूसरे से जुड़ी नहीं होती हैं। सांस्कृतिक स्तर, मानक स्तर का एक हिस्सा होता है। सांस्कृतिक धारणाएँ हमें बताती हैं कि संबंध दो तरह के होते हैं दृ रक्त–संबंध और वैवाहिक संबंध। लेकिन इन संबंधों के साथ कैसे जुड़ा जाए, किस तरह से पेश आया जाए, उसे मानक प्रणाली निर्देशित करती है। नातेदारी के अध्ययन के लिए यह जरूरी है कि मानक प्रणाली के नियमों को जाना जाए, लेकिन इसे 'सांस्कृतिक प्रणाली' के साथ रख कर देखना जरूरी है जो कि वास्तव में व्यवहार में प्रचलित रहता है।

इस तरह, श्नाईडर के अनुसार नातेदारी सांस्कृतिक है। वे ठोस व्यवहार में अंतर्निहित अर्थों और प्रतीकों पर गौर करते हैं। श्नाईडर यह जानने कि कोशिश

करते हैं वे कैसे एक सुसंगत और परस्पर आबद्ध अर्थों और प्रतीकों की दुनिया बनाते हैं।

5.2.3 अमेरिकी नातेदारी

अमेरिकी संस्कृति में नातेदारी दायरे का अध्ययन करने के क्रम में श्नाईडर ने पाया कि यह दायरा दो अलग–अलग हिस्सों से बने वृहत्तर दायरे का केवल एक हिस्सा है, जो कि निम्नलिखित हैंरू

- साझा जैव–आनुवंशिक तत्व या रक्त, जो विरासत में मिला प्राकृतिक तत्व है
- आचार संहिता या नैतिक निर्देश, जो संबंधित सदस्यों के बीच एकजुटता सुनिश्चित करता है।

इन दो तत्वों के संयोग से नातेदारों की तीन प्रमुख श्रेणियाँ बनती हैं –

अ) जब दोनों तत्व एक साथ होते हैं, तो रक्त संबंध बनते हैं। इन रक्त संबंधियों को प्रकृतिक तौर पर जुड़ा हुआ माना जाता है, जो प्राकृतिक या स्वाभाविक तौर पर जुड़ी चीजों का हिस्सा होते हैं।

आ) जब केवल आचार संहिता की मौजूदगी हो और साझा जैव आनुवंशिक तत्व अनुपस्थित हो, तब विवाह द्वारा या अन्यथा, संबंधियों की श्रेणी बनती है। यह प्राकृतिक न होकर नियम–कायदों के वृहत्तर श्रेणी का हिस्सा होती है।

इ) अंत में, जब साझा जैव–आनुवंशिक तत्व की मौजूदगी अकेले होती है तब संबंधियों की श्रेणी बनती है

श्नाईडर के लिए नातेदारी का ताल्लुक साझे जैव–आनुवंशिक तत्वों से न होकर हम उसे साझा कैसे करते हैं, उससे है। यदि साझा तत्वों की कल्पना वर्ग कारकों की बजाय मात्रा के संदर्भ किया जाए, तो व्यक्तिगत कारकों को ध्यान में अवश्य रखा जाना चाहिए। कारण मात्रा में परिवर्तन से नातेदारी संबंध में परिवर्तन होता है। इस तरह, नातेदारी संबंधों को प्रकृति और संस्कृति के क्रम में समझा जा सकता है।

सपिंड के आधार पर विशुद्ध का अमूर्तिकरण कर, श्नाईडर राष्ट्रीयता और धर्म का भी जिक्र करते हैं। नातेदारी की तरह, ये दोनों भी प्रकृति–क्रम और संस्कृति–क्रम दृ इन दो घटकों से बने होते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोटः अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) पारंपरिक नातेदारी अध्ययन की श्नाईडर द्वारा की गई आलोचना के बारे में संक्षेप में बताएँ। केवल तीन वाक्यों में उत्तर दें।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

2) श्नाईडर सांस्कृतिक प्रणाली और मानक प्रणाली के बीच क्या भिन्नता बतलाते हैं? उदाहरण सहित व्याख्या करें।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

5.3 सांस्कृतिक दृष्टिकोण की महत्ता

श्नाईडर के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से नातेदारी–अध्ययन ने ऐसे मानववैज्ञानिक अध्ययनों का पुनरुत्थान किया जो संस्कृति पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इन अध्ययनों को 'नया नातेदारी अध्ययन' कहा गया है, कारण ये ऐसे संबंधों की पड़ताल करते हैं जो जैविक नहीं होते। इनका फोकस समय के साथ देखभाल करने वाले से पनपने वाली नातेदारी प्रणाली और इसके लिए सकारात्मक 'चयन' प्रतिक्रिया पर रहता है (वेस्टन 2013)। इन अध्ययनों ने पश्चिम में नातेदारी के नए और उभरते रूपों पर प्रकाश डाला है। इन्होंने जिन कुछ मुद्दों को सामने लाया है वे हैं – विषमलैंगिक विवाह की अस्थिरता और तलाक, समलैंगिक विवाह का प्रचलन, लैंगिक समानता, समलैंगिकों के अधिकार, गिरती प्रजनन दर, अकेले रहने वालों की बढ़ती संख्या आदि।

5.3.1 जेनेट कार्स्टन – संबद्धता की संस्कृति

डेविड श्नाईडर द्वारा नातेदारी की आलोचना के बाद 'संबद्धता' और साझेदारी जैसे शब्द, नातेदारी–अध्ययन में लोकप्रिय हो गए। इसने रक्त–संबंधों और गठबंधन के आधार पर नातेदारी की अधिक औपचारिक या सीमित परिभाषाओं से, संबद्धता–आधारित अनौपचारिक संबंधों की ओर शिफ्ट या बदलाव प्रदर्शित किया है। जोर समाज में रोजमर्रा की पारस्परिकता की बारीकियों को पकड़ने पर है।

गतिविधि 1

समकालीन शहरों में रहना हमें रक्त और वैवाहिक संबंधों के बाहर, लोगों से जुडने के अनेकों अवसर प्रदान करता है। कुछ ऐसे अवसरों/परिस्थियों के बारे में बताएँ जब संबद्धता की संभावना बन सकती है।

इस दृष्टिकोण के मुताबिक 'संबद्धता' के अंतर्गत प्रजनन, विवाह, गोद लेने और अन्य तरीकों से बनाए गए संबंध सभी आ जाते हैं। मानवविज्ञानी जेनेट कार्स्टन ने इस शब्द का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया। उन्होंने जैविक और सामाजिक के बीच पूर्व–निर्मित विश्लेषणात्मक ध्रुवीयता से बाहर निकलने लिए 'संबद्धता' का प्रयोग किया। कार्स्टन के मुताबिक संबद्धता का वर्णन करने या उसे व्यक्त करने के लिए समाज–विशेष में प्रचलित पदों और व्यवहारों का उपयोग करना चाहिए, जिनमें से कुछ मानवविज्ञानियों द्वारा पारंपरिक तौर पर पर समझे जाने वाले नातेदारी के दायरे से बाहर स्थित होते हैं। मलेशिया के लैंगकॉवी द्वीप–समूह में संबद्धता संबंधी विचारों से पता चलता है कि 'सामाजिक' को 'जैविक' और जैविक को 'प्रजनन' से बीच अलगाव किस हद तह संस्कृति–सापेक्ष होता है। लैंगकॉवी में संबद्धता, प्रजनन तथा एक साथ रहने और खाने दोनों से बनता है। उनके बीच प्रयोग में लाई जाने वाली शब्दावली के लिहाज से, इनमें से कुछ को सामाजिक और अन्यों को जैविक कहना कोई मायने नहीं रखता है। (कार्स्टन 1995, 236))। संबद्धता की अवधारणा नातेदारी को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित करती है, जिसके जरिए संबंध लगातार बनाए, अनुभव और नियोजित या व्यवस्थित किए जाते हैं।

5.3.2 मर्लिन स्ट्रैथरन

मर्लिन स्ट्रैथरन ने तकनीकी हस्तक्षेपों द्वारा जैविक की धारणा पर सवाल उठाते हुए, नातेदारी के जैविक और सांस्कृतिक के निहायत ही दो अलग–अलग श्रेणियों पर सवाल उठाया। श्नाईडर से प्रेरित होते हुए स्ट्रैथरन सुझाव देती हैं कि नातेदारी न केवल 'प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित सामाजिक निर्मिति' है, बल्कि खुद प्रकृति से जैविक का बोध होने लगा है। उनका तर्क है कि जैविक यानि आनुवंशिक संबंध को स्वाभाविक तौर पर नातेदारी मान लिया गया। अपनी किताब *किनशिप इन ग्रेट ब्रिटेन में स्ट्रैथरन* (1992) ने तकनीकीगत बदलाव के कारण जैविक की धारणा में आए बदलावों पर रोशनी डाली है। प्रकृति और संस्कृति के बीच के द्विभाजन या ध्रुवीयता को खारिज करते हुए, उन्होंने दलील दी कि जैविक पहलू अब नातेदारी चिन्हित करने का निर्विवाद आधार नहीं रह गया। चूँकि नई प्रजनन तकनीकी, जैविक नातेदारी की निर्मिति में मानवीय हस्तक्षेप को दृश्यमान बनाती हैं, इसलिए

उनसे प्राकृतिक और जैविक ज्यादा स्पष्टता के साथ सामने आए हैं। ऐसे में, उन्हें प्रदत्त मानकर चलना अब संभव नहीं रह गया। अब यह जरूरी हो गया कि जैविक के तार, सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं से हुए जुड़े हुए हैं, इस मान्यता के आधार पर चर्चा और पड़ताल होनी चाहिए (स्ट्रैथरन, 1992).

5.3.3 कैथ वेस्टन – चुना गया का परिवार

'चुना गया परिवार' शब्द का प्रयोग समलैंगिकों के परिवारों के लिए किया जाता है, जो अस्वीकृति और हिंसा के कारण अपने जैविक परिवार से बाहर निकलने का विकल्प चुनते हैं। यह परिवार जन्म–परिवार के ठीक उल्टा होता है। कैथ वेस्टन ने सैन फ्रांसिस्को में रहने वाले समलैंगिकों के परिवारों का अध्ययन किया जिनमें नातेदारी की धारणा प्रतीकात्मकता, प्रेम और दोस्ती के आधार पर मौजूद थी। उन्होंने परिवार की उस समझ की आलोचना की, जो केवल पुरुष और महिला के बीच यौन संबंध के माध्यम से बनता है। समलैंगिकों के बीच परिवार का उनका अध्ययन अपनी मर्जी से चयन के माध्यम से नातेदारी बनाने का एक उदाहरण पेश करता है। वह हमें जैविक नातेदारी के प्राकृतिक लक्षणों को प्रदत्त मानकर न चलने का सुझाव देते हुए कहती हैं कि 'चयन' के आधार पर जैविक बंधनों से परे परिवार का गठन संभव है। वेस्टन ने नातेदारी की बुनियाद में रक्त संबंधों की जगह सहमति आधारित संबद्धता को रखा। कारण इस तरह की समलैंगिक नातेदारी में संबंध, दोस्ती और प्रेम के आधार पर बनते हैं न न कि जैविक या वैवाहिक के आधार पर। सांस्कृतिक तौर पर ऐसे परिवारों की पहचान, केवल रहने की व्यवस्था में नहीं बल्कि जिस तरह की इच्छा या कामना को ये पुनरुत्पादित करते हैं, उसमें भी निहित होती है। इस तरह की कामना, साथ रह रहे युगल को संतान पैदा करने की ओर उन्मुख करता है, और इस लिहाज से यह दांपत्य, अन्य दांपत्यों के समान ही होता है। भेद युगल बनाने के तरीके या किस्म में होता है। समलैंगिक युगल, प्रजनन संबंधी नातेदारी की परिभाषा से जैव–आनुवांशिक पहचान को विस्थापित करना चाहते हैं। यह परिवार और नातेदारी की सांस्कृतिक समझ का एक और उदाहरण है, जहाँ रिश्ते प्रदत्त नहीं होते बल्कि रोजमर्रा की स्थितियों में बनाए और बरकरार रखे जाते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोटरू अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1). 'सांस्कृतिक संबद्धता' की अवधारणा के बारे में बताएँ।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

2). जैविक परिवार और चुने गए परिवार के बीच दो अंतर बताएँ।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

5.4. नए नातेदारी अध्ययन

सांस्कृतिक दृष्टिकोण नातेदारी को एक प्रतीकात्मक प्रणाली के रूप में परिभाषित करता है, जिसकी पैठ अन्य वैचारिक क्षेत्रों (जैसे धर्म) में भी है। इस तरह के

दृष्टिकोण का परवर्ती अध्ययनों पर गहरा प्रभाव पड़ा। पश्चिमी और गैर–पश्चिमी समाजों में नातेदारी के बाद के अध्ययनों में जब एथनिसिटी, व्यक्तिगत अनुभव और अन्य खासियतों समेत सांस्कृतिक कारकों को संज्ञान में लेते हुए गहन वर्णन किया गया, तब नातेदारी की समझ में आई भिन्नता नजर में आने लगी। सांस्कृतिक

दृष्टिकोण का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उसने नातेदारी को महज जैविक तक सीमित नहीं रहने दिया। उसने नातेदारी के तहत उन संबंधों को भी लाया जो रक्त या विवाह संबंधों के दायरे से बाहर थे।

5.4.1. जैविक से परे

श्नाईडर के सांस्कृतिक दृष्टिकोण का कई उन मानवविज्ञानियों ने स्वागत किया, जो नातेदारी को जैविक बंधनों से मुक्त करना चाहते थे। समलैंगिकों ने इस धारणा का समर्थन किया कि गैर–पारंपरिक परिवारों के बनाने और उनमें रोजमर्रा के जीवन संचालन के लिए जैविक पहलू कोई मानक निर्धारित नहीं करता है। सांस्कृतिक

दृष्टिकोण ने विषमलैंगिक और एकल यौन–संबंधों को सम्मिलित कर, परिवार और विवाह की समझ को विस्तार दिया। जैविक के इतर आधार पर बने संबंधों के बड़े फलक को समझने में 'काल्पनिक' नातेदारी की अवधारणा प्रासंगिक हो गई। अब विद्वान और सामजविज्ञानी इस बात को लेकर ज्यादा जागरूक हैं कि नातेदारी केवल शारीरिक संबंधों का प्रतिबिम्ब नहीं है बल्कि इसकी विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों में सामाजिक रूप से निर्मिति होती है। इस तरह की जागरूकता का एक परिणाम वंशावली संबंधों से परे जाने की कोशिशों और संबद्धता जैसे कहीं अधिक उपयुक्त शब्दों के प्रयोग के रूप में देखने को मिला।

5.4.2. नारीवादी योगदान

नारीवादियों द्वारा इसका सबसे अधिक उपयोग किया गया। उन्होंने लैंगिकता की विरचना या पुनर्पाठ के लिए इस दृष्टिकोण का उपयोग किया। नारीवादियों ने लैंगिकता को सांस्कृतिक निर्मिति बताते हुए कहा कि इसका अर्थ समाज–दर–समाज भिन्न अर्थात समाज–सापेक्ष होता है। उन्होंने लैंगिकता को विश्लेषण के केंद्र में रखा तथा वंश और गठबंधन की बजाय सत्ता संबंधों की गतिकी (डायनामिक्स) पर जोर दिया। इस तरह, नातेदारी और वंश–संबंध को अधिकारों और कर्तव्यों के पदों में नहीं बल्कि सत्ता और उसे हासिल करने की रणनीतियों के पदों में निर्मित किया गया। पितृवंशीय व्यवस्था पर कोलियर के अध्ययन ने इस बात पर रोशनी डाली कि पितृस्थानिक आवासों में महिलाएं अपने पति और पुत्रों के माध्यम से अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए कैसी रणनीतियाँ अपनाती हैं।

जेन कोलियर और सिल्विया यानागिसाको ने यह दलील दी कि नातेदारी और लैंगिकता के अध्ययन को प्रजनन/पुनरुत्पादन के जैविक तथ्यों के संदर्भ में नहीं रखा जाना चाहिए क्योंकि वे खुद सांस्कृतिक निर्मिति होते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न संस्कृतियों में पुरुष और महिला, स्त्रीत्व और पुरुषत्व की अलग–अलग धारणाएँ होती हैं। नातेदारी–अध्ययन में नारीवादी योगदान ने एक नई दिशा दी। उसमें महिलाओं को एजेंट (सक्रिय कर्ता) के रूप में देखने पर जोर दिया गया, न कि महज देह के रूप में, जिन पर पुरुषों का अधिकार है और जो परिजनों को एक समूह में साथ बांधने का काम करती हैं। नब्बे के दशक तक ऐसे अनेकों अध्ययन सामने आए जिन्होंने परिजन, खासकर माता और मातृत्व के अर्थ में आए बदलावों को दर्ज किया। रागोन ने अपनी किताब सरोगेट मदरहुडरू कॉन्सेप्शन इन द हार्ट (1994) में जैविक माता (सरोगेट) और दत्तक माता (सरोगेट को किराए पर लेने वाली महिला) के बीच भेद किया। उनके मुताबिक गोद लेने वाली माता वह है जो बच्चे को अपने हृदय में धारण करती हैं न कि गर्भ (देह) में। वह बताती हैं कि दोनों माताएँ खरीदारी और अनुष्ठानों में गर्भावस्था के अनुभवों को कैसे साझा करती हैं और इस तरह, मातृत्व को नया अर्थ मिलता है। मातृत्व को केवल जैविक संबंधों पर नहीं, बल्कि देखभाल पर आधारित माना जाता है।

5.4.3. प्रजनन की नई तकनीकी (NRTs)

एनआरटी (प्रजनन की नई तकनीकी) का आशय दुनिया भर में प्रजनन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली नई तकनीकों, जिनमें जीन ट्रांसफर, इन वाइट्रो फर्टिलाइजेशन, भ्रूण ट्रांसफर, गैमेटे इंट्रा–फैलोपियन ट्रांसफर, सरोगेसी, स्पर्म बैंक, फ्रोजन भ्रूण आदि शामिल हैं, से है। ये तकनीकी सेक्स या यौन–क्रिया को प्रजनन से अलग करना आसान बनाती हैं। इनका इस्तेमाल कर कोई महिला चाहे तो बिना सेक्स किए गर्भ धारण कर सकती है। ये महिला के संपर्क में आए बिना पुरुष को उसकी संतान का आनुवांशिक पिता बनने को मुमकिन करती हैं। एनआरटी नातेदारी की पूर्व प्रचलित सांस्कृतिक निर्मिति को चुनौती देती हैं और नई तरह के सामाजिक संबंधों को वजूद में लाकर, नातेदारी संबंधों को पुनर्परिभाषित करती हैं। ये लोगों को संबद्धता, पहचान और सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों की अपनी समझ को स्पष्ट करने में सक्षम बनाती हैं। मर्लिन स्ट्रैथरन के अनुसार, एनआरटी ने नातेदारी को समझने के तरीकों में एक नया आयाम जोड़ा है। जिसे कभी स्वाभाविक माना जाता था, वह अब चयन या इच्छा का विषय बन गया है। इस प्रकार, तकनीकी ने नातेदारी का वि–प्राकृतिकीकरण किया है। इसने लोगों को पुनरुत्पादन और संबंध बनाने के लिए चयन या इच्छा का अवसर देकर उन्हें सक्षम बनाया है। इसने नातेदारी नेटवर्क में नए तरह के लोगों, जैसे कि शुक्राणु या अंडाणु दाता, को सम्मिलित होने की संभावना उत्पन्न की है। इस प्रकार, तकनीकी नातेदारी को नए मायने देती है जो जैविक से परे हैं और नातेदारी के नेटवर्क को भी फैलाती है।

सुसान मार्था ने अपनी किताब *एग्स एंड वोंब्स: द ओरिजिंस ऑफ ज्यूईशनेस* में दिखाती हैं कि प्रजनन की तकनीकी, यहूदी व्यक्तिपन को लैंगिकता और सेक्स भूमिकाओं के जरिए कैसे रचती हैं। आईवीएफ (इन वाइट्रो फर्टिलाइजेशन) के एथनोग्राफीय अध्ययन के माध्यम से वह बताती है कि कैसे यहूदी महिलाएं राज्य–स्वीकृत प्रजनन तकनीकी का उपयोग करके प्रजनन में अपनी एजेंसी का प्रयोग करती हैं। उनके शोध से पता चलता है कि कैसे एकल, निःसंतान इजरायली महिलाएं भी अपने प्रजनन के भविष्य पर नियंत्रण कर सकती हैं। इस प्रकार,

नातेदारी जैविक और वैवाहिक तक ही सीमित नहीं है। मातृत्व और नातेदारी दोनों सांस्कृतिक निर्मितियाँ हैं, जिनमें महिलाएं महज आदेश पालन करने वाली भूमिका में नहीं होती हैं, बल्कि सहायक प्रजनन तकनीकी की प्रक्रिया में संलग्न होने के नाते वे सक्रिय नियंत्रक की भूमिका में होती हैं। इससे उन्हें यहूदी नातेदारी की एक नई श्रेणी विकसित करने में मदद मिलती है जो विवाह की धार्मिक और सामाजिक संस्था से अलग होते है।

बोध प्रश्न 3

नोटः अ) उत्तर लिखने के लिए नीचे दिए गए खाली स्थान का उपयोग करें।

ब) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिला कर देखिए।

1) नए नातेदारी अध्ययन को परिभाषित करें।

_____
_____
_____
_____
_____
_____
_____

2) नातेदारी अध्ययन को पुनर्जीवित करने में नारीवादी मानवविज्ञानियों के योगदान की चर्चा करें।

_____
_____
_____
_____
_____

5.5 श्नाईडर के बाद नातेदारी अध्ययन

डेविड श्नाईडर द्वारा प्रतिपादित सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने संबद्धता के व्यापक स्पेक्ट्रम को नातेदारी–संबंधों की समझ के दायरे में लाकर उन पर नई रोशनी डाली। जैविक नातेदारी की सार्वभौम धारणा को पूर्ण रूप से पीछे छोड़ दिया गया। नीधम के अनुसार, यह प्रक्रिया की व्याख्या है जिससे नातेदारी की निर्मिति होती है न कि अपने–आप में प्रक्रिया। इसलिए व्याख्या और प्रतीकात्मक अर्थ अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। इस प्रकार, एक विश्लेषणात्मक श्रेणी के रूप में नातेदारी की जगह श्संबद्धताश और श्साझा तत्वश की धारणाओं को लाया गया। इसके अलावा, श्नाईडर ने नातेदारी की मानववैज्ञानिक समझ में विद्यमान पश्चिमी पूर्वाग्रह को उजागर किया और सांस्कृतिक दृष्टिकोण की मूल्यवत्ता को उजागर किया, जो कि अध्ययन किए जा रहे समुदाय या समाज का अपना (इनसाइडर) दृष्टिकोण होता है। हालाँकि, श्नाईडर के बाद उभरी नातेदारी की दृष्टि काफी समरूप थी। नातेदारी को वर्ग, लैंगिकता आयु या जातीयता आधारित भेद के बिना समझा जाता था। आलोचकों (बाद के वर्षों में खुद श्नाईडर भी) ने इस बात पर जोर दिया कि संस्कृति की एक समरूप और सुनिश्चित लक्षण के विपरीत, व्यक्तिगत तौर पर प्रतिभागियों ने वास्तव में अमेरिकी समाज में अपनी विशेष स्थिति के साथ–साथ अपने खुद के जीवन–इतिहास के आधार पर नातेदारी के विभिन्न रूपों और इसके अर्थों को व्यक्त किया होगा। इसलिए, नातेदारी के अध्ययन में सांस्कृतिक सापेक्षवाद का मजबूत असर था।

5.6 सारांश

इस इकाई में हमने मानवविज्ञानी डेविड श्नाईडर द्वारा प्रतिपादित नातेदारी अध्ययन के सांस्कृतिक दृष्टिकोण के बारे में सीखा। यह दृष्टिकोण प्रजनन और उसकी प्रक्रिया को दिए गए प्रतीकात्मक अर्थ पर जोर देता है। श्नाईडर के अनुसार, पश्चिमी मानवविज्ञानियों की नातेदारी की समझ समस्याप्रद थी, कारण यह उनकी

इस पूर्वमान्यता पर आधारित थी कि जैविकता सार्वभौमिक है और हर कोई रक्त और विवाह के माध्यम से जुड़े होने के समान नियम का पालन करता है। अमेरिकी नातेदारी के अपने अध्ययन में उन्होंने दिखाया कि नातेदारी की समझ कैसे इस बात पर निर्भर करती है कि लोग इसकी व्याख्या किस तरह करते हैं। अन्य मानवविज्ञानियों ने संबद्धता और साझे तत्व की प्रक्रिया पर जोर देने के लिए उनके दृष्टिकोण को अपनाया। यह दृष्टिकोण जैविकता से परे नातेदारी को समझने के लिए प्रासंगिक हो गया। साथ ही, विवाह और परिवार की संस्था की प्रदत्त परिभाषा पर भी सवाल उठे। समलैंगिकों द्वारा बनाए गए परिवारों को समझने के लिए

सांस्कृतिक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया, जो कि साझेदारी और दोस्ती पर आधारित थे। इसने नई प्रजनन तकनीकी द्वारा निभाई गई भूमिका पर प्रकाश डालते हुए माता बनने और मातृत्व के मायने को पुनर्परिभाषित किया और नातेदारी के दायरे को विस्तार दिया। नारीवादी मानवविज्ञानियों ने लैंगिक संबंधों की रचना में घर–परिवार में चलने वाली सत्ता की गतिकी और रणनीतियों की व्याख्या के लिए सांस्कृतिक दृष्टिकोण का उपयोग किया।

5.7 संदर्भ

1. कार्स्टन, जेनेट, 1995, 'द सब्सटेंस ऑफ किनशिप एंड द हीट ऑफ द हार्ट: फीडिंग, पर्सनहुड, एंड रिलेटेडनेस अमंग मलय इन पुलाऊ लैंगकॉवी' *अमेरिकन एथनोलॉजिस्ट,* 22 (2)रू 223–24

2. श्नाईडर डी. एम. (1980), *अमेरिकी किनशिप: ए कल्चरल एकाउंट*, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस,

3. ———————— (2004 संस्करण), 'व्हाट इज किनशिप ऑल अबाउट', आर पार्किन और एल. स्टोन (सं.), *किनशिप एंड फैमिली: एन एंथ्रोपोलॉजिकल रीडर*, यू. एस.ए., ब्लैकवेल, पृ. 362–77

4. कान, सुसान मार्था, 2004, 'एग्स एंड वॉम्ब्स : द ओरिजिन्स ऑफ ज्यूइशनेस', आर. पार्किन और एल. स्टोन (सं.), *किनशिप एंड फैमिलीः एन एंथ्रोपोलॉजिकल रीडर*, यू.एस.ए., ब्लैकवेल, पृ. 362–77

5. वेस्टन कैथ (2013), *फैमिलीज वी चूजः लेसबियंस, गेस, किनशिप*, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. श्नाईडर ने निम्नलिलिखित आधार पर पारंपरिक नातेदारी अध्ययन की आलोचना कीः–

अ) पारंपरिक सिद्धांत जैविक पहलू के एकतरफा महत्व पर आधारित होने के कारण अपनी उपयोगिता में सीमित थे। गैर–पश्चिमी समाज के परिवार और नातेदारी को समझने में वे उपयुक्त नहीं हो सकते थे।

आ) उनका सरोकार केवल जैव–आनुवांशिक (बायोजेनेटिक) तत्वों की साझेदारी से था। वे साझेदारी की मात्रा या हद का अध्ययन नहीं कर रहे थे।

इ) वे संरचना और संस्कृति में कोई भेद नहीं कर रहे थे।

2. उन्होंने सांस्कृतिक प्रणाली को ऐसी इकाइयों (भागों) से बनी हुई प्रणाली माना, जो खास तरह से परिभाषित किए जाते हैं और जिनके बीच, विभिन्न विचारों के आधार पर भिन्नता होती है। मानक प्रणाली नियम–कायदों से बनी होती है। समाज और समुदाय में स्वीकृति पाने के लिए लोगों से उनके पालन करने की अपेक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए, धर्म–संस्था मानक प्रणाली है जबकि पूजा के लिए मंदिर जाना सांस्कृतिक ।

बोध प्रश्न 2

संबद्धता की संस्कृति का प्रयोग जैनेट कार्स्टन ने नातेदारी के उन संबंधों के लिए किया जो जैविक और वैवाहिक संबंधों के दायरे से बाहर बनते हैं। इसमें एक–दूसरे से जुड़े होने के आधार पर संबंध बनते हैं। उदाहरण के लिए, एक कमरे में रह रहे दो मित्रों के बीच की संबद्धता।

1. जैविक परिवार और चुने गए परिवार में दो अंतर निम्नलिखित हैंः–

अ) जैविक परिवार प्रजनन आधारित होता है जबकि चुना गया परिवार मित्रता आधारित।

आ) जैविक परिवार की सदस्यता जन्म के आधार पर मिल जाता है जबकि चुने गए परिवार का सदस्य बड़े होने पर अपनी मर्जी से बना जाता है।

बोध प्रश्न 3

1) नए नातेदारी अध्ययन से वंश और गठबंधन दृष्टिकोण से सांस्कृतिक विश्लेषण की ओर उन्मुख होने का बोध होता है। इसमें रक्त, आनुवंशिकी और विवाह से परे, व्यापक या वृहत्तर फ्रेमवर्क के तहत नातेदारी को समझने पर फोकस रहता है। प्रजनन की नई तकनीकी, समलैंगिक परिवारों और अन्य सम्बद्ध प्रक्रियाओं ने नातेदारी की समझ में नए आयाम जोड़े हैं।

2) नारीवादी मानवविज्ञानियों ने लैंगिकता को सांस्कृतिक निर्मिति बताते हुए कहा कि इसका अर्थ समाज–दर–समाज भिन्न अर्थात समाज–सापेक्ष होता है। उन्होंने लैंगिकता को विश्लेषण के केंद्र में रखा तथा वंश और गठबंधन की बजाय सत्ता संबंधों की गतिकी (डायनामिक्स) पर जोर दिया। इस तरह, नातेदारी और वंश–संबंध को अधिकारों और कर्तव्यों के पदों में नहीं बल्कि सत्ता और उसे हासिल करने की रणनीतियों के पदों में निर्मित किया गया।